आकुलतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही हैं। कुरुक्षेत्र में कृष्ण का उद्घोष आपको निमंत्रण दे रहा है—'क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते। क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।' अर्थात् हे अर्जुन, इस नपुंसकता और निराशा को छोड़ो तथा कमर कसकर जीवन के महाभारत के लिए तैयार हो जाओ। तुम्हारे जीवन का यही पावन कर्त्तव्य और पुरुषार्थ है।"

दस

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बाद प्यारेलाल नागपुर के झंडा-आन्दोलन में सम्मिलित हुए और उसके बाद इस आन्दोलन को घर-घर तक पहुँचाने के लिए वे छत्तीसगढ़ के गाँव-गाँव में घूमने के लिए निकल पड़े। इनका मूल कार्य था स्वतन्त्रता की चेतना गाँव के लोगों में जाग्रत की जाये तथा वहाँ से जत्थों में सत्याग्रही भेजे जायें जो शहरों में चल रहे झंडा-आंदोलन को गति प्रदान करें इस कार्यक्रम में वे इतने अधिक व्यस्त हो गये कि उन्हें नांदगांव लौटने के लिए समय ही नहीं मिल सका। दो-ढाई वर्षों के बाद जब वे वहाँ लौटे तो मजदूरों ने उन्हें घेर लिया। मजदूर-आंदोलन की खबरें तो उन्हें मिलती रहती थी, किन्तु असली खबरें तो उन्हें करमू ने ही दी। उसने कहा।

"ठाकुर साहब! आपके कहने पर हमने मजदूरों का साथ दिया। उसका परिणाम भी अच्छा निकला। किन्तु अधिकारीगण तभी से मुझसे बदला लेने का अवसर भी खोजने लगे। यह सच है कि मैंने उन्हें अपनी ओर से एक भी अवसर नहीं दिया। मैं बराबर कार्य पर उपस्थित होता रहा और मन लगाकर अपना कार्य भी करता रहा, पर इधर एक माह से लम्बू साहब ने मुझे नौकरी से निकाल दिया है। उनका कहना है कि

मैं मजदूरों को भड़काता हूँ मैं मजदूर-संघ का मंत्री हूँ और मेरी सारी गतिविधियाँ संदिग्ध हैं।

दरअसल एक दिन लम्बू साहब ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया और कहने लगे – मैं तुम्हारे काम से बहुत प्रसन्न हूँ, तुम्हें पदोन्नत किया जाता है। मैंने कहा, "आपकी बड़ी कृपा है मुझ पर।" वे कहने लगे, "करमू, कोई व्यक्ति किसी पर कृपा नहीं करता। अब मैं तुम्हें पदोन्नत कर रहा हूँ तो तुम्हें हमारा भी कुछ काम करना होगा।"

"कौन सा, काम साब ?" मैंने पूछा।

"सुमित्रा के नेतृत्व में मजदूर-महिलाओं का गुट आजकल बहुत तगड़ा हो गया है। तुम खुद जानते हो इस प्रकार की गुटबाजी से मिल नहीं चल सकती। मैं चाहूँ तो उसे अभी निकाल सकता हूँ पर इससे स्थिति बिगड़ सकती है।"

"जरूर बिगड़ सकती है। आपको ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए।" मैंने कहा।

"इसलिए कुछ ऐसा करो कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।"

"इसके लिए तो अच्छा यही होगा कि महिला-मजदूरों से जितना काम लिया जाता है, उन्हें उतने पैसे दिये जायें और किसी को अनावश्यक परेशान न किया जाये।"

"मैंने तुम्हें उपदेश देने के लिए यहाँ नहीं बुलाया है।"

"तब !" मैंने पूछा।

"पहले की तरह ही तुम अपने आतंक से इन सबकी अकल ठिकाने लगा दो। दो-चार के हाथ पैर बराबर करो। मैं देख लूँगा कि तुम पर कोई आँच नहीं आ सकती।"

"आजकल तो जरहू आपके निर्देशों पर यह सब काम कर रहा है।"

"मैं भी पहले यही समझता था, पर वह तो बड़ा दोगला निकला। यहाँ हमसे भी मिला है, उधर मजदूरों का नेता भी बना हुआ है।"

"आखिर है तो मजदूर ही।"

"इसीलिए मैं बार-बार कहता हूँ कि इस कौम पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"इसका मतलब है आप मुझ पर भी विश्वास नहीं करते होंगे ?"

"तुम्हें पदोन्नत करने का मतलब यही है कि तुम काम के आदमी हो। पहले यह सब कार्य करते भी रहे हो, तुमने यह सब करने की ताकत और बुलन्दी भी।"

"साब ! मजदूर होकर मजदूरों की खिलाफत मुझसे नही होगी। हाँ, अधिकारियों के विरुद्ध नारेबाजी या हड़ताल करनी हो तो कहो, आपका यह कार्य कल पूरा हो जायेगा।" मैंने कहा।

"करमू ! बदनाम सुमित्रा को करना है, अधिकारियों को नहीं। सुमित्रा एक बदचलन औरत है। उसके चरित्र के सम्बन्ध में कुछ भी हल्ला उड़ा दो। हम उसे कल ही निकाल बाहर करेंगे। असामाजिक और भ्रष्ट तत्वों को मिल में नही रखा जा सकता।"

"किसी की नौकरी लेने का कार्य मुझसे नहीं होगा।"

"तो नौकरी से हाथ तुम्हें धोने पड़ेंगे।"

"क्या यही मेरी पदोन्नति है।"

"उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं उनके कार्यालय से बाहर आ गया। दूसरे ही दिन मिल आफिस से रंग के डिब्बों की चोरी के अपराध में उन्होंने मुझे तथा दो-तीन अन्य साथियों को नौकरी से अलग कर दिया।"

"फिर तुम लोगों ने क्या किया ?"

"हम लोग सभी मजदूर नेताओं से मिले, सुमित्रा से भी बात की। सभी का कहना था कि ठाकुर साहब को आ जाने दो तभी कुछ किया जा सकता है। तब से हम आपके आने की प्रतीक्षा ही कर रहे थे।"

"अपना केस कोर्ट में प्रस्तुत करो, पैरवी मैं करूंगा।" ठाकुर ने कहा।

"उससे कोई लाभ नहीं होगा साब ! वह अपने दो-चार गुण्डों को गवाह के रूप में खड़ा कर देगा।"

"फर्क पड़ता है। इस बार जिरह में लम्बू साहब की धज्जियां उड़ जायेंगी। मैं जानता हूँ, उन्होंने चोरों की न रिपोर्ट की होगी और न माल बरामद किया होगा, और न कोई जाँच-पड़ताल ही की होगी। बिना किसी प्रमाण के स्थायी मजदूर को सेवा से मुक्त नहीं किया जा सकता। फिर सेवा-मुक्त करने के भी कुछ नियम हैं—नोटिस देना, बचाव का अवसर देना। यह सब भी उन्होंने कुछ नहीं किया होगा। हर दृष्टि से लम्बू साहब इस मामले में छोटे सिद्ध हो जायेंगे।"

"मैं तो आपकी शरण में आया हूँ ठाकुर साहब ! आपको जो भी अच्छा लगे वह कीजिए।"

उस दिन ठाकुर साहब ने रियासती कोर्ट में करमू द्वारा आवेदन पत्र लगवा दिया। दूसरे दिन सबेरे उन्हीं के निर्देश पर करमू रानी साहिबा के दर्शन के लिए राजमहल भी गया।

●

ग्यारह

●

पूजा-पाठ करके जब रानी साहिबा अपने भेंट-कक्ष में पहुँची, तब तक वहाँ नित्य की तरह दीवान साहब, डाक्टर और कुछ जमींदार पहुँच चुके थे। सबने अपने स्थान से उठकर रानी साहिबा का अभिवादन किया।

बात रानी साहिबा ने ही उठायी। सुना है डाक्टर साहब, पानी की खराबी के कारण कुछ गाँवों में लोग बहुत बड़ी संख्या में बीमार

पड़ रहे हैं। शायद हैजे की शिकायत है। इसके लिए कोई उपाय किया गया या नहीं ?"

डाक्टर साहब चुप रहे तो रानी साहिबा ने ही कहा—"आज ही ऐसे गाँवों में पीने के पानी की व्यवस्था की जाये। नये कुएँ खोदे जायें और जिन कुओं का पानी सड़ गया है, उनमें दवाइयाँ छिड़की जायें।"

"जी, रानी साहिबा !" डाक्टर ने कहा।

"कल महिला चिकित्सालय (रानी सूर्यमुखी देवी महिला चिकित्सालय) में गाँवों की कुछ महिलाएँ प्रसव के लिए भरती हुई थीं। सुना है, कुछ नर्सों ने उनसे पैसे माँगे हैं ?"

"मुझे इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं रानी साहिबा।"

"तो ऐसी नर्सों के नामों का पता लगाओ और उनसे कह दो कि भविष्य में इस प्रकार की कोई शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। क्या उन्हें पर्याप्त वेतन नहीं मिलता ?"

"मिलता है रानी साहिबा !"

"तो क्या रहने की असुविधा है या पहले की तुलना में काम कुछ अधिक बढ़ गया है ?"

"सम्भव है रानी साहिबा !"

"कुछ नर्सों की भर्ती और कर ली जाये तथा कुछ नर्सों को गाँवों मे सप्ताह में दो-चार बार भिजवाने की भी व्यवस्था करो ताकि उन महिलाओं, बच्चो तथा वृद्धो को लाभ मिल सके जो किसी कारण यहाँ तक आने में असमर्थ हैं।"

"जी रानी साहिबा !"

"डाक्टर साहब, अपने चिकित्सालय के डाक्टरों तथा नर्सों का वेतन भी बढ़ा दिया जाये और हर सुरक्षित जचकी पर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाये।"

"जी रानी साहिबा ! आप सबकी अन्नदाता हैं। आपकी उदारता की तुलना नहीं।" डाक्टर ने कहा।

"दीवान साहब, कल फूलपुर के कुछ हरिजन और अन्य जातियों के कुछ लोग आये थे। वहाँ का गोंठिया उन्हें अपने कुएँ से पीने का पानी नहीं लेने देता। आधे से अधिक गाँव को पानी लेने के लिए दो-तीन मील दूर जाना पड़ता है।"

"मैंने भी सुना है रानी साहिबा।"

"उन गोंठियों को समझा दो तथा जल्दी ही इन सब लोगों के लिए पानी की व्यवस्था कर दो। नया कुआँ ही खुदवा दो।" रानी साहिबा ने कहा।

"जो आज्ञा रानी साहिबा! खपरीगाँव से मुख्तयार रामदास लौट आए हैं। उनका कहना है कि वहाँ कोई भी व्यक्ति ठेके पर खेती करने के लिए तैयार नहीं है और रियासत की ओर से खेती करने पर हर वर्ष भारी हानि हो रही है। मेरी मानें, वहाँ खेती का काम बन्द ही करा दें।" दीवान ने कहा।

"अगर लाभ नहीं होता तो खेती बन्द करवा दी जाये, यह तो कोई तर्क नहीं है। उस खेती से उस गाँव के कुछ आदमी पल तो रहे हैं। वे कहाँ जाएँगे। खेती ज्यों की त्यों होने दो। चोरियाँ अपनी जगह हैं, होती ही रहती हैं। आखिर हम अपने कर्मचारियों तथा प्रजा को वेतन या राहत के रूप में देते ही कितना हैं?"

"जी रानी साहिबा!"

"करमू ने यहाँ आने की अनुमति माँगी थी! क्या वह पहुँच गया है?"

उत्तर करमू ने ही दिया, "रानी साहिबा के पाँव छूता हूँ। मैं लगभग एक माह से घर बिठा दिया गया हूँ। मैनेजर साहब ने मुझ पर चोरी का झूठा आरोप लगाया है।"

"मैंने वास्तविकता का पता लगा लिया है दीवान साहब! मैंने आज से कुछ दिन पहले आपसे कहा भी था कि उन निकाले गये मजदूरों को काम पर वापस लिया जाये। यह मैं क्या सुन रही हूँ?"

"रानी साहिबा ! मैंने उसी दिन मैनेजर से आपका सन्देश कह दिया था। सुना है, मैनेजर ने इन सारे कर्मचारियों को बुलाया भी था, पर ये लोग गये नहीं। इधर प्यारेलाल के बहकाने में आकर करमू ने मैनेजर के विरुद्ध कोर्ट में कल केस भी चला दिया है। तो अब फैसला हो जाने दीजिए।"

"दीवान साहब, केस का फैसला कब और क्या होगा, मैं जानती हूँ। उसकी प्रतीक्षा नही करनी है। इन्हें आज ही काम पर वापस लिया जाय और इनका बकाया वेतन भी दिया जाये। ये निर्दोष हैं।"

जैसी आज्ञा रानी साहिबा !"

"करमू ! और कुछ कहना चाहते हो ?"

"नही रानी माँ ! आपके रहते हुए किसी को चिन्ता करने की जरूरत नही रह गई है।"

महारानी के आदेशानुसार उसी दिन करमू, चन्दू तथा अन्य कर्मचारियों को सेवा मे वापस ले लिया गया। किन्तु इस आदेश से अंग्रेज मैनेजर बौखला उठा, "अगर इसी तरह रानी द्वारा हमारे प्रशासन मे हस्तक्षेप होता रहेगा तो मिल चौपट हो जायेगी। ये मजदूर किसी को भी चैन से नही रहने देंगे। वस्तुत. मजदूर प्रेम, दया, करुणा और ममता की भाषा नहीं समझते। इनके लिए धमकी, मारपीट, गाली-गलौज और छटनी के सिद्धान्त ही ठीक हैं, तभी ये ईमानदारी से काम करते हैं। हमें मजदूरों की कोई कमी भी नही है रोज ही मिल के गेट से कितने नये मजदूरों को भगा दिया जाता है। लगता है कि अब इस सम्बन्ध में पोलीटिकल एजेन्ट से चर्चा करनी ही होगी।"

•

बारह

रानी साहिबा के आदेश से करमू तथा उसके साथियों को पुनः मिल की सेवा में लिए जाने के समाचार से ठाकुर प्यारेलाल प्रसन्न थे, पर करमू ने मजदूरों को जिस दुर्दशा का बयान किया था, उससे वे चिन्तित भी हो उठे थे।

करमू ने ही बताया था कि प्रथम मजदूर-आन्दोलन के समय जो सुविधाएँ प्रदान की गई थीं, वे अब अधिकारियों द्वारा पूरी तरह छीनी जा चुकी हैं। काम के घन्टे फिर बढ़ा दिये गये हैं। मजदूरी के हिसाब-किताब में फिर गड़बड़ियाँ की जाने लगी हैं और न जाने कितने निर्दोष मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया गया है। मजदूर आतंकित हैं, अधिकारियों के मनोबल बढ़े हुए हैं। छोटे-छोटे बच्चों से भी कसाई की तरह व्यवहार किया जाता है और यदि कुछ विरोध करने का साहस किया जाता है तो ऐसे लोगों से लातों की भाषा में बातें की जाती हैं। हम सब फिर बंधुआ मजदूरों की तरह जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं।

"करमू! यह मिल वस्तुतः अंग्रेज शासन की क्रूरता का छोटा-सा दर्पण है। जो यहाँ हो रहा है, वही बड़े पैमाने पर पूरे देश में हो रहा है। इन अत्याचारों से मुक्ति का एकमात्र उपाय है—अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। मुक्ति का रास्ता असहयोग, आंदोलन, स्वावलम्बन, सङ्गठन, दृढ़-संकल्प, त्याग और क्रांति का है।" करमू को उन्हीं ने बताया था कि गाँधी जी के झंडा-आन्दोलन में भाग लेने के लिए वे गाँव-गाँव में जागृति का शंखनाद करते हुए घूमे हैं। हर जगह वही दरिद्रता, वही शोषण और अधिकारियों के प्रति लगभग वही शिकायतें सुनने को मिलती हैं। मनुष्य का जन्म स्वतन्त्रता के वातावरण में होता है। उसकी

मूल प्रकृति है सदा स्वतन्त्र रहना, इसीलिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मनुष्य आगे बढ़ने में कभी पीछे नहीं रहता। माना कि मार्ग संकटों से भरपूर है, पर स्वतन्त्रता जैसी अमूल्य वस्तु बिना मूल्य चुकाये प्राप्त भी नही होती। झंडा-सत्याग्रहियो पर पुलिस ने घोड़े दौड़ाये है, उन्हें लाठियों और बन्दूकों के कुन्दो से पीटा है, बूटो से रौदा है, पर यह भारतवासियों का ही साहस है कि उनके हाथ के कभी तिरंगा झंडा नीचे नही गिरा। वह एक के बाद दूसरे हाथो मे गया और लहराता रहा। इसीलिए तिरंगे झंडे का पहला रंग केसरिया रखा गया है। अंग्रेज इस झंडे के आतंक से कांप उठे है और यह स्वीकार करने लगे है कि भारत के इन स्वतन्त्रता-दीवानो को दमन के मार्ग से नही रोका जा सकता। जब तक इस प्रकार का जोश पूरे देश मे उत्पन्न नही होता तब तक क्या हम स्वतन्त्र हो पायेंगे करमू ?"

ठाकुर साहब सपनों में खो गये थे। वे कह रहे थे, वातावरण अपने आप निर्मित नही होता, वह निर्मित किया जाता है। कुआं के पास प्यासा जाता, फिर श्रमपूर्वक पानी निकाल कर अपनी प्यास बुझाता है। ये अंग्रेज इस देश में कुओं की तरह ही स्थिर हैं, जड़ हैं गहरे हैं। इनसे पानी निकालना एक कठिन कार्य है। फिर इनसे हमें जो पानी मिल रहा है वह गंदा है, दूषित, और गुलामी की भावनाओं से भरा हुआ। हमें इन बड़े-बड़े गड्ढों को पाटना है। यह दुर्भाग्य की बात है कि चालीस करोड़ से अधिक लोगों पर मुट्ठी भर अंग्रेज शासन कर रहे हैं. उन्हें कठपुतलियों की तरह नचा रहे हैं।" सहसा उनकी मुट्ठियां बंध गईं और उन्होने कहा, "करमू ! गांधी जी कहते हैं कि अंग्रेज हमारे देश की स्वतन्त्रता हमे एक दिन थाली में सजा कर उपहार की तरह सौंप देंगे। तुम क्या सोचते हो ? क्या हम अंग्रेजों पर विश्वास कर सकते हैं ? मेरा मन बार-बार कहता है—नहीं, नहीं ! पर इस प्रकार के भयानक रक्तपात, भीषण हिंसा, लूटपाट बर्बरता और दमन से लाभ भी तो नहीं है। अहिंसा और सत्याग्रह, कायरता, पलायन और समझ

प्रवृत्तियों के प्रतीक नहीं हैं। वे अपने देश के आत्मिक तेज को प्रगट करते हैं। पशुबल की सदा पराजय होती है। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है 'सौरज धीरज जिहि रथ चाका, सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका'' ' ऐसे दिव्य आत्मिक रथ को पराजित करने वाला कोई इस पृथ्वी पर पैदा ही नहीं हुआ। इसीलिए मुझे लगता है कि सत्य ब्रह्मास्त्र है और अहिंसा अमोघ कवच। यही रास्ता ठीक है। करमू तुम मजदूरों को संगठित करो, हम फिर हड़ताल करेंगे। सत्याग्रह ही मिल की अव्यवस्था का एकमात्र उपचार है।''

इस बार हड़ताल की तैयारियाँ वृहत् पैमाने पर प्रारम्भ की गई थीं। मिल के मैनेजर और दीवान साहब को पता था कि अब ठाकुर प्यारेलाल के आ जाने से हड़ताल कभी भी चालू हो सकती है। अतः उनके भी दमनकारी षड्यंत्र चालू हो गये थे। बाहर से मजदूर बुलाने की व्यवस्था भी की जा रही थी। नये मजदूरों को इसी शर्त पर नौकरी दी जा रही थी कि वे किसी तरह की हड़ताल में शामिल न हों। पुराने मजदूरों को धमकियाँ दी जा रही थी कि यदि पाँच मिनट भी देरी से आये तो नौकरी से निकाल दिया जायेगा। वातावरण ऊमस, बेचैनी और आतंक में डूबता जा रहा था। इधर राजूलाल शर्मा, राधेलाल, बंशीलाल, चुन्नीलाल, नन्दलाल और सीताराम साव के साथ मिलकर प्यारेलाल मजदूरों के संगठन को एक सुदृढ़ किले का रूप दे रहे थे। उन्हें यह विश्वास था कि यह हड़ताल काफी लम्बी खिंच सकती है और नये मजदूर नौकरी से हटने के भय से सङ्गठन तोड़ सकते हैं। अतः चन्दा एकत्र कर मजदूरों के भरण-पोषण की व्यवस्था भी पहले की तुलना में इस बार अधिक व्यापक और समक्ष बनाई जा रही थी।

एक दिन संध्या के समय दीवान और लम्बू साहब ने सुमित्रा को अपने आफिस में बुलवाया। दीवान ने कहा—"आजकल तुम्हारी गति-विधियाँ मिल के विरोध में बढ़ती आ रही हैं! तुम क्या चाहती हो?"

"मुझे क्या चाहना है साहब!" सुमित्रा ने उत्तर दिया।

"मतलब ?"

"मतलब यह है कि आप चाहें तो सब ठीक हो सकता है।"

"तुम कहना क्या चाहती हो ?" दीवान ने गुर्राकर पूछा।

"हम सब लोगों को जो सुविधाएँ दी गई थी, उन्हें समाप्त कर दिया गया है, मिल में घाटा बताकर हमारी मजदूरी भी कम कर दी गई है। हमें फिर १२-१४ घंटे काम करने के लिए विवश किया जाता है; न करने पर पैसे काट लिए जाते हैं या फिर गैरहाजिरी लगा दी जाती है। गुण्डो से मजदूर-भाइयों को अपमानित करवाना तो अब बहुत सामान्य बात हो गई है।"

"मजदूर बिना हन्टर के काम नही करते।"

"यह केवल आपका विचार है। मजदूरों की तकलीफें भी जानने का किसी ने प्रयत्न किया ?"

"लगता है तुम उस प्यारेलाल के बहकावे में आ गई हो। वह तुम लोगों को मूर्ख बनाकर अपनी रोटियाँ सेक रहा है।"

"मैं जानती हूँ, वे गरीबों के मसीहा हैं।"

"तू यह भी जानती है कि इस समय किससे बातें कर रही है ?"

"रियासत के दीवान साहब से।"

"तू एक दीवान के फंदे से बच गई तो यह मत समझना कि सदा यही होता रहेगा।

'आप मालिक हैं, हम मजदूर हैं। आपको छोड़कर हम कहाँ जायेंगे ?

"अब आई रास्ते पर। मैनेजर साहब, यह सुमित्रा काम की औरत है। इसके इशारे पर दूसरी मजदूरिनें जान तक दे सकती हैं। इसकी पगार बढ़ा दो और इसे रहने के लिए लेबर कालोनी में एक खोली भी दे दी जाये। यह सब कुछ ठीक कर लेगी।"

"मालिक ! मैं जाऊं क्या ?"

"हाँ जाओ। पर आगे से ध्यान रखो, तुम्हें इनाम भी दिया जायेगा

और सारी सुविधाएँ भी। तेरे काम के घंटे भी कम कर देंगे, अब खुश है न ?"

"और दूसरे लोगों का क्या होगा ?"

"तूने सबका ठेका लिया है क्या ? अपना काम देख, उनसे हम निपट लेंगे।"

"यह न होगा मालिक ! कहती हुई सुमित्रा आफिस के बाहर निकलना चाहती थी कि दीवान गरजा, 'सिपाही, इसे पकड़ कर गुनहखाने में डाल दो।"

मिल के अहाते में ही पानी का एक बहुत बड़ा डबरा था, जो बेशरम की झाड़ियों से लगभग ढँका हुआ था। गंदगी का साम्राज्य था वहाँ। माड़ी, रंगाई, धुलाई आदि का गंदा पानी ऐसे दुर्गंध छोड़ता था कि वहाँ एक मिनट खड़ा रहना मुश्किल हो जाता था। उसी के बीच में बनी थी एक छोटी-सी कोठरी, जहाँ चीटे के बराबर बड़े-बड़े मच्छरों का अखण्ड राज्य था। वही कहलाता था गुनहखाना। अपराधी को वहाँ रात्रि में बन्द कर दिया जाता था। अगर अपराध कुछ संगीन हुआ तो उसके हाथ भी बाँध दिये जाते थे, जिससे वह मच्छरों को न भगा सके और न शरीर खुजला सके। अंधकार, गंदगी, बदबू और मच्छरों की बेतहाशा मार से अच्छे-अच्छे गुण्डों का जोश भी दो घंटों में ठंडा हो जाता था। सुमित्रा ने विरोध किया और चिल्लाना चाहा तो उसके हाथ बाँध दिये गये और एक गंदा कपड़ा उसके मुँह में ठूँस दिया। तत्पश्चात् तीन-चार सिपाहियों ने मिलकर उसे गुनहखाने में पटक दिया।

दीवान साहब ने सन्तोष की साँस लेते हुए कहा, "अब देखना मैनेजर साहब ! थोड़ी ही देर में सब ठीक हो जायेगा। मच्छरों की मार कोड़ों की मार से अधिक पीड़ादायक होती है। सारा शरीर खून से लथपथा जाता है।

सुमित्रा के बंदी बनाये जाने की खबर थोड़ी ही देर में सारे मजदूर वर्ग में फैल गई और उन्होंने देखते ही देखते चारों ओर मिल को घेर

लिया। कुछ मजदूर गये और वे गुसलखाने से सुमित्रा को छुड़ाकर ले आये। इसी बीच मिल के द्वार पर बड़े-बड़े ताले लटका दिये गये। मजदूर नारे लगा रहे थे—"दीवान जल्लाद है। हमारी माँगें पूरी करो। गुलामी का नाश हो।" रात्रि में देर तक नारेबाजी होती रही। सबेरा होते ही सारे मजदूर मिल के गेट के पास फिर जमा हो गये जिससे कोई भी व्यक्ति भीतर न आ सके।

हड़ताल प्रारम्भ हुए लगभग तीन माह बीत गये। कोई भी पक्ष समझौता करने को तैयार नही था। अतः दोनों पक्षों की बौखलाहट भी बढ़ती जा रही थी। हड़ताल तोड़ने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सभी का खुलकर प्रयोग किया जा रहा था, किन्तु मजदूर अपने संकल्पों पर अडिग थे। ठाकुर साहब आन्दोलन के प्राण थे। वे रात दिन मजदूरो के बीच घूम रहे थे, उन्हे धैर्य दे रहे थे, उनके खाने-पीने का प्रबन्ध कर रहे थे और उनके मनोबल को बढ़ाये हुए थे।

एक दिन मजदूरों का एक जातीय भोज हो रहा था। घूमते हुए कुछ मुसलमान सैनिक उस जगह पहुँच गये। सिपाही मजदूरों से क्रोधित तो थे ही, वे उन्हें अपमानित करने का कोई अवसर छोड़ते भी नहीं थे। अतः वे भण्डार-गृह में जूते पहने ही घुस गये और पैरों की ठोकरों से उन्होंने सारी खाद्य-सामग्री बरबाद कर दी। मजदूरों का क्रोध भी अपनी सीमा लाँघ चुका था, पर तत्काल प्यारेलाल ने पहुँचकर स्थिति सँभाल ली और उन्हें सलाह दी कि जाकर पुलिस अधीक्षक से इसकी शिकायत कर दो। कानून अपने हाथों में मत लो। सैकड़ों की संख्या में मजदूर पुलिस अधीक्षक के बंगले पहुँचे, पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया और उल्टे मजदूरों को ही गालियाँ दीं और वहाँ से उन्हें भगा दिया। उत्तेजित मजदूर घर की ओर लौट रहे थे। रास्ते में मिला था उन्हें प्रभाकर राव। यह मिल का एक बदनाम क्लर्क था। अंग्रेजों का पिट्ठू। मजदूरों के वेतन से पैसे काटकर खा जाना इसका साधारण-स

काम था। अनेक महिला-मजदूरिनें इसकी काम-पिपासा का शिकार भी बन चुकी थीं। वह व्यंग्य से हँसा था—"अब भोगो अपनी करतूतों का फल!"

तभी जरहू गौड़ ने उसे कसकर एक थप्पड़ लगाते हुए कहा, "हम तो भोग ही रहे हैं, तुम भी भोगो।" एक ही थप्पड़ में प्रभाकर राव के मुँह से खून गिरने लगा था। वह भागा। भागते-भागते कुछ मजदूरों ने उसे दो-चार ठोंकरें भी लगा दीं, "ये हिन्दुस्तानी कुत्ते।" करमू ने कहा था, "इन्हीं के कारण हमारा देश गुलामी की जंजीरों को तोड़ नहीं पाता।"

प्रभाकर सीधे पुलिस अधीक्षक के बँगले पहुँचा।

"क्या हुआ प्रभाकर! कहीं कोई दुर्घटना हो गई क्या?" पुलिस अधीक्षक भोलानाथ कौल ने पूछा।

"साहब! मजदूरों ने मुझे पीटा है।"

"उनकी यह हिम्मत!" कौल साहब की त्योरियाँ चढ़ गईं। उन्होंने तत्काल थानेदार को आदेश दिया, "पुलिस फोर्स लेकर जाओ और सारे मजदूर नेताओं को बंदी बना लो। देखो, एक भी छूटने न पाये। इन हरामजादों ने नींद हराम कर दी है।"

सैकड़ों की संख्या में हथियारबन्द पुलिस के सिपाहियों ने थोड़ी ही देर में मजदूरों को चारों ओर से घेर लिया। उन्होंने चुने हुए तेरह मजदूर नेताओं को बंदी बना लिया। मजदूरों का क्रोध भड़क रहा था, पर ठाकुर साहब का निर्देश—"आन्दोलन को हिंसात्मक नहीं बनने देना है। गिरफ्तारियाँ सामान्य बातें हैं। सत्याग्रही को बंदी बनाया ही जाता है।" मजदूर शान्त बने हुए थे। अधीक्षक ने नगर में १४४ धारा लागू कर दी और प्यारेलाल को विशेष रूप से आदेश दिया कि वे न तो सभा करें, न किसी प्रकार का भाषण दें, न मजदूरों का मार्ग-दर्शन करें। प्यारेलाल के शान्त करने के बाद भी मजदूर इस आदेश से और अधिक उत्तेजित हो उठे। वे मिलकर नारा लगाने लगे, "तानाशाही

नहीं चलेगी नहीं चलेगी। मजदूर एकता जिन्दाबाद। पुलिस बर्बरता का अन्त हो। हम अपने अधिकार लेकर रहेंगे, लेकर रहेंगे।"

जब पुलिस ने बंदी मजदूर नेताओं को अदालत में पेश किया तो चार हजार से अधिक मजदूरों ने अदालत को घेर लिया और चारों ओर से नारेबाजी होने लगी। बिगड़ती हुई स्थिति देकर अदालत ने उस दिन की कार्यवाही बन्द कर दी और बन्दूकों की घेराबन्दी में बन्दी मजदूरों को जेल भेज दिया।

दूसरे दिन रियासत के अधीक्षक राय साहब उमराव सिंह ने प्यारेलाल को अपने बँगले पर बुलवाया। वहाँ कौल साहब पहले से ही उपस्थित थे। उमराव सिंह ने डपटकर प्यारेलाल से कहा—

"हम अच्छी तरह जानते हैं कि मजदूरों को भड़काने और उनके द्वारा हड़ताल कराने के पीछे तुम्हारा षड्यंत्र है।"

"मजदूर न्यायोचित माँगों के समर्थन में हड़ताल पर हैं, उन्हें मानवोचित सुविधाएँ और जीने के अधिकार तो मिलने ही चाहिए।" ठाकुर ने उत्तर दिया।

"हमने तुम्हें यहाँ मजदूरो के पक्ष में दलीलें पेश करने के लिए नहीं बुलाया है।"

"मैं तो उनका वकील हूँ, आप जहाँ दलीलें सुनना पसन्द करेंगे, वहाँ सुना दूँगा।"

'ज्यादा चतुर बनने की कोशिश मत करो प्यारेलाल! यह आग तुम्ही ने सुलगाई अब तुम्ही इसे शान्त करो।"

"मजदूर नेताओं को बंदी बनाकर उस आग में घी आप डाल रहे हैं और दोषारोपण मुझ पर कर रहे हैं। छोड़ दो इन नेताओं को तो आग अपने आप शान्त हो जायेगी।"

"हमने उन्हें छोड़ने के लिए बन्दी नहीं बनाया है।"

"तो फिर हमसे उपाय क्यों पूछ रहे हैं?"

"ये सब बदमाश और अपराधी हैं।"

"सच्चे अर्थों में बदमाश और अपराधी तो मिल के अधिकारी हैं, बंदी बनाना है तो उन्हें बनाओ।"

"अपनी बकवास बन्द करो प्यारेलाल। दोषी कौन है, यह हम अच्छी तरह जानते हैं।"

"तो जब तक हड़ताल का निर्णय न हो, तब तक बंदी मजदूर नेताओं पर की जाने वाली अदालती कार्यवाही बन्द कर दो, स्थिति अपने आप शान्त हो जायेगी।" फिर थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा—

"इन स्थितियों में इससे अच्छा और कोई उपाय मैं नहीं सोच सकता। आपने बेकार ही मुझे बुलाने का कष्ट किया।" ठाकुर साहब घर लौट आये।

दूसरे दिन अदालत के चारों ओर आठ हजार से अधिक मजदूरों की बेहद उत्तेजित भीड़ एकत्र हो गई थी। उमराव सिंह इस अप्रत्याशित भीड़ को देखकर भयभीत हो उठे। मुट्ठी भर सैनिकों के द्वारा वहाँ अनुशासन-व्यवस्था बनाये रखना बहुत कठिन था। अतः कौल साहब ने पुनः ठाकुर साहब को बुलवाया और उनसे आग्रह किया कि वे मजदूरों को सम्बोधित करें तथा उन्हें अनुशासन और धैर्य बनाये रखने लिए कहें, ताकि कोई अप्रिय घटना न घटे। ठाकुर साहब स्वयं हड़ताल को अनुशासित बनाये रखने के पक्षपाती थे। अतः उन्होंने पुलिस की गाड़ी के ऊपर खड़े होकर उसी के लाउडस्पीकर से बोलना आरम्भ किया—

"बहनो और भाइयो!"

मैं आपके सुख-दुःख का साथी आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि इस ऐतिहासिक हड़ताल में अभी तक जिस शक्ति, एकता और धैर्य का परिचय आपने दिया है, वह भारतीय मजदूर हड़तालों के इतिहास में सर्वथा अनूठी मिसाल है। इसके लिए मैं आप सब के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

हम अपने स्थान पर हैं, सही हैं, पर कानून अपने स्थान पर होता है

और हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि वह अंधा होता है किन्तु उसके हाथ बहुत लम्बे होते हैं। कानून को अपने हाथ में लेना या उसकी प्रक्रिया में बाधक बनना उचित नहीं है। यह अपने आप में एक बड़ा अपराध है। आप सब निश्चित रहें, हमारे भाइयों का कोई बाल बाँका भी नहीं कर सकता। वे निर्दोष हैं और इसे सिद्ध करने के लिए अदालतें हैं, जज हैं, वकील हैं। इन्हें अपना कार्य करने दीजिए। हम, खुद इन भाइयों की पैरवी करेंगे और वस्तुतः जो दोषी हैं, उन्हे दण्ड दिलाने का प्रयत्न करेंगे। हमारा आपसे इस समय केवल यही निवेदन है कि आप सब यहाँ से अपने घर चले जाएँ, अदालत की सीमा से दूर हट जाएँ, अपनी शक्ति को खंडित न होने दें, हड़ताल जारी रखें, हड़ताल के समय इस प्रकार की कुछ अप्रिय घटनाएँ होना स्वाभाविक है आप धैर्य न खोएँ, यहाँ से जल्दी से जल्दी हट जाएँ, मेरा निवेदन है·····।

थोड़ी देर मे सारी भीड़ तितर-बितर हो गई। कौल साहब ने ठाकुर साहब के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, ''मिस्टर प्यारेलाल ! यू हैव डन ए ग्रेट थिंग, थैंक यू वेरी मच, रियली यू आर ए वंडरफुल मैंन !''

''कप्तान साहब ! मुझे नहीं, मजदूरों की बुद्धि और विवेक को धन्यवाद दें और सत्ता पक्ष वालों को भी समझायें कि वे अपनी हठधर्मी छोड़ दें।'' ठाकुर साहब ने कहा।

''दैट आई विल सी, थैंक यू।'' कौल ने कहा।

ठाकुर साहब वहाँ से अपने घर आ गये थे। उस दिन भी मजदूरों पर कोई अदालती कार्यवाही नहीं हो सकी थी। अतः संध्या समय उन्हें पुनः जेल भेजा गया। किन्तु रास्ते में बंदी मजदूरों से सम्बन्धित महिलाओं ने पुलिस वालों पर हमला बोल दिया और बंदियों को छुड़ाकर अपने साथ ले गई।

उमराव सिंह तथा कप्तान कौल के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी। समाचार पोलीटिकल एजेन्ट डब्ल्यू०ई०ले के पास पहुँचा। वे इस अपमान से लाल-पीले हो उठे और स्वयं रायपुर से चार दिनों के भीतर रिजर्व

पुलिस की एक बड़ी टुकड़ी लेकर भौंगांव पहुँच गये। आते ही उन्होंने बंदी नेताओं को पुनः पकड़ना प्रारम्भ कर दिया। कुछ ही देर में बारह नेताओं को फिर बंदी बना लिया, किन्तु तेरहवें नेता का कहीं पता नहीं चल रहा था। सन्देह के आधार पर उसे खोजने के लिए पुलिस वालों ने ठाकुर प्यारेलाल का घर घेर लिया और तलाशी भी ली, किन्तु वहाँ वह नहीं मिला। इस समय प्यारेलाल रानीसागर में स्नान करने गए थे और निश्चिन्ततापूर्वक तैर रहे थे। वे प्रतिदिन तालाब में एक-दो घंटे तैरा करते थे उन्हें पता ही नहीं चला कि उनके घर में क्या हो रहा है। किन्तु मजदूरों ने पुलिस के दस्तों को ठाकुर साहब के घर की ओर जाते हुए देखा था, अतः हजारों की संख्या में वे भी उनके घर की ओर भागे। पुलिस को जब तेरहवाँ बन्दी नहीं मिला, तो वह लौट पड़ी। मजदूरों ने सिपाहियों का पीछा किया, धक्का-मुक्की हो रही थी। लाल बाग के पास ले के आदेश पर पुलिस वालों ने मजदूरों को बन्दूकों के कुन्दों से पीटना चालू कर दिया। पुलिस के एक सिपाही ने जब हट्टे-कट्टे जरहू गौड़ को बन्दूक के कुन्दों से पीटना चाहा तो उसने एक झटके में उसकी बन्दूक छीन ली। इस घटना से ले और अधिक उत्तेजित हो गया। उसने गोली चलाने का आदेश दे दिया और स्वयं अपनी पिस्तौल से जरहू को निशान' बना लिया। बन्दूकों की धाँय-धाँय और गगनभेदी चीत्कारों को सुनकर ठाकुर साहब का ध्यान लाल बाग की ओर गया। रानीसागर से लालबाग दूर नहीं है। बीच में है पुराना किला, फिर बूढ़ा सागर भी उसी के किनारे हैं लाल बाग। लाल बाग अर्थात् लाल गुलाबों का बाग। तत्काल ठाकुर साहब शोर-गुल सुनकर घटना-स्थल की ओर दौड़े। तब तक जरहू गौड़ शहीद हो चुका था। बारह अन्य मजदूर बुरी तरह से घायल हो गये थे। छोटी-मोटी चोटें तो हजारों मजदूरों को आई थी। पुलिस वाले तथा ले साहब वहाँ से जा चुके थे। ठाकुर साहब ने घायलों को अस्पताल में भरती कराया तथा उत्तेजित मजदूरों को शान्त किया। आवश्यक कार्यवाही समाप्त कर जरहू

की शव यात्रा निकाली गई। यह दृश्य अत्यन्त मार्मिक होते हुए भी अद्भुत एवं अपूर्व था। शव को कन्धा दिये हुए आगे-आगे ठाकुर साहब चल रहे थे और उनके पीछे सारे मजदूर औरतें, पुरुष, बाल-बच्चे तथा नागरिक थे। जरहू मजदूर-आन्दोलन में शहीद होने वाला देश का प्रथम मजदूर था। देश के विभिन्न समाचार पत्रों में कई दिनों तक इस गोली काण्ड की बर्बरता तथा जरहू गौड़ के समाचार छपते रहे।

ठाकुर साहब ने इस गोली काण्ड का निष्पक्ष जाँच के लिए गर्वनर को लिखा। नागपुर से एक सेकेट्री आये भी, पर उन्होंने सारा दोष प्यारेलाल ठाकुर के सिर पर मढ़ दिया और उन्हें रियासत तथा प्रशासन के लिए खतरनाक आदमी घोषित कर दिया। उसके निर्देश पर नांदगाँव रियासत के दीवान ने उन्हें तीन दिनों के भीतर रियासत की सीमा छोड़ कर बाहर चले जाने का आदेश दिया।

इस बार पुनः प्यारेलाल ने इस निष्कासन के विरोध में गवर्नर से लिखा-पढ़ी की, उनके समर्थन में मजदूरों तथा नागरिकों ने हड़तालें भी की। इस अन्यायपूर्ण कार्यवाही की विभिन्न समाचार पत्रों में भर्त्सना भी की गई, पर अन्ततः ठाकुर साहब को रियासत की सीमा छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।

•

तेरह

•

उस दिन सबेरे सबेरे गोड़ में पैजन, हाथ मे चूरा, लाख का कड़ा, गले में काली पोत की पतली-सी माला और लाल लुगरा पहने सहसा एक औरत रोती हुई प्यारेलाल के पैरों पर गिर पड़ी। पास ही खड़ी थी सुमित्रा।

"क्या हुआ सुमित्रा !" प्यारेलाल ने हड़बड़ी में पूछा।

"महाराज, यह दुखिया है—बीसा की पत्नी। वही बीसा, जिसने कभी मुझे मार-पीटकर भगा दिया था और इसे चूड़ी पहनाकर ले आया था। कल रात में इसे भी मारा-पीटा और घर से निकाल दिया। इस बार वह एक दूसरी लड़की को अपने पास ले आया है।"

"पर ऐसा हुआ कैसे ?"

"लड़की के पास कुछ खेती थी। वह घर में अकेली थी। कुछ पैसे सरपंच तथा समाज के मुखिया को दिए और रातोंरात साथ ले आया। लड़की की उम्र १४-१५ साल की होगी। कहता है, शादी की है।"

"पचास साल के इस बूढ़े के साथ गाँव वालों ने पन्द्रह वर्ष की लड़की का विवाह कैसे होने दिया ?"

"पैसे देकर मुँह जो बन्द कर दिया था।"

"दुखिया ! तुम कचहरी में अपना केस ले चलो। ऐसे दुष्ट लोगों को सजा मिलनी ही चाहिए। कानून अभी जिन्दा है।"

उसी दिन प्यारेलाल ने दाऊ श्यामलाल दास के कोर्ट में मुकदमा चला दिया। दाऊ साहब ने कहा, प्यारेलाल, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। तुम किस प्रकार के केशों की पैरवी करते हो, यह भी जानता हूँ। अब तुम कहना क्या चाहते हो, यह भी हम नहीं सुनना चाहते। तुम बहस में अपना समय नष्ट मत करो, तुम्हें और भी काम होंगे। तुम केवल निर्णय लिखकर मेरे सामने प्रस्तुत करो, मैं उस पर दस्तखत किए देता हूँ और इसी समय ठाकुर साहब ने निर्णय लिखा, "बीसा वल्द फगनू, ग्राम फूनपुर, मुकाम नांदगाँव, उम्र ५० साल ने अपनी एक पत्नी के रहते हुए दूसरी नाबालिक लड़की के साथ पैसे देकर विवाह किया है। इसी तरह के एक और अपराध में उसे लगभग १५ वर्ष पूर्व दण्ड भी दिया जा चुका है। लड़की के साथ विवाह करते समय उसकी मूल दृष्टि उसकी सम्पत्ति पर रही है। बीसा ने अपनी पत्नी

दुखिया से पीछा छुड़ाने के लिए उसे मार-पीटकर अपने घर से बाहर निकाल दिया है। उसके ये सारे कार्य अत्यन्त गम्भीर अपराध हैं। दुखिया की इच्छा के अनुकूल उसे अब बीसा से अलग रहने की अनुमति दी जाती है, किन्तु उसके भरण-पोषण का दायित्व बीसा पर रहेगा। इस कार्य के लिए बीसा प्रतिमाह उसे पच्चीस रुपये देगा तथा अपनी स्थायी सम्पत्ति का आधा भाग भी दुखिया को देगा। नयी पत्नी पुरनिया अपनी इच्छा के अनुकूल बीसा के साथ रह सकती है या फिर अपने माता-पिता के घर लौट सकती है। चूँकि बीसा ने उसके साथ शादी की अतः उसके भरण-पोषण का दायित्व भी उस पर रहेगा। दण्ड स्वरूप बीसा के धान के दो खेत दुखिया के नाम किये जाते हैं।"

दाऊ श्यामाचरण ने इसके नीचे बिना पढ़े ही अपने हस्ताक्षर कर दिये थे।

दुखिया ने ठाकुर साहब के पैर छूते हुए कहा, "वकील साहब ! आप हम सब गरीबों के बहुत बड़े सहारा हैं। तुम्हें हम क्या दे सकते हैं ? यह तीन वर्ष का मेरा बच्चा है। यह रहा आपके चरणों में। इसकी रक्षा कीजिएगा।"

"दुखिया, रक्षा करने वाला, सबकी देखरेख करने वाला तो वह ऊपर वाला है, हम सब तो माध्यम हैं। तुम मिल में नौकरी कर लो और अपने बच्चे की अच्छी तरह देखभाल करो। देखो, इस पर बीसा की छाया न पड़े और सुमित्रा तुम तो इसकी बड़ी बहन हो, इसे अब अपना संरक्षण दो।"

"जैसी आज्ञा ठाकुर काहब !" सुमित्रा ने कहा था।

दुखिया अब सुमित्रा के घर के बरामदे में ही रह रही थी। एक दिन रात्रि में सबकी नजरें बचाकर बीसा उसके पास पहुँचा और सिसक-सिसक कर रोया था, "पुरनिया को लाना ही मेरे लिए काल हो गया दुखिया ! वह तो दूसरे के साथ भाग गई और घर में जो कुछ था, सब अपने साथ ले गई। मैं अपने अकेले लः के अमरू की सौगन्ध

खाकर कहता हूँ, मुझे क्षमा कर दो दुखिया ! अब रात-रात भर सो नहीं पाता, खाँसी आती है। डाक्टर ने टी० बी० बताई है। अब क्या होगा मेरा। जो दो खेत बचे थे उन पर सेठ ने कब्जा कर लिया है। मैं तो हर तरफ से लुट गया। तुम्हें छोड़कर अब कहाँ जाऊँगा। क्षमा कर दुखिया, क्षमा कर ! चल घर अपने, यहाँ दूसरों की परछी में क्यों पड़ी है और मेरा अकेला लड़का अनाथ की तरह घूमता रहता है। मुझे धिक्कार है ! मेरी तो मिल की नौकरी भी चली गई।''

उसी रात्रि में दुखिया बीसा के घर चली गई।

सुमित्रा ने अपने घर के भीतर से सब कुछ सुन लिया था। पर वह चुप बनी रही। उसके पति ने कहा, लगता है दुखिया के मन में अभी भी बीसा के प्रति प्रेम है।''

''क्यों न हो, आखिर वह उसका पति ही तो है।'' सुमित्रा ने उत्तर दिया था।

कुछ दिनों बाद दुखिया ने ही मिल में काम करते हुए सुमित्रा को बताया था कि उसने अपने दोनों खेत फिर बीसा के नाम कर दिए हैं और यह भी लिख दिया है कि पति के रहते हुए उन पर मेरा कोई अधिकार नहीं रहेगा।''

''और तुमने लिख दिया दुखिया ?'' सुमित्रा ने पूछा।

''मुझसे उसकी पीड़ा नहीं देखी गई बहन !''

''और तुम्हारी अपनी पीड़ा ?''

''हम कौन-सा सुख भोगने के लिए इस संसार में पैदा हुए हैं। अभी तक जैसे जिये, वैसे ही आगे भी लेंगे।'' कहते हुए दुखिया अपने काम में लग गई थी।

चौदह

•

चार बजे सबेरे उठकर प्यारेलाल दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर गीता पाठ कर रहे थे। गीता का पाठ करना उनका प्रतिदिन का नियम था गीता पाठ के बाद वे रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का भी पाठ करते थे। जब इससे मुक्त हुए तो उन्होंने आवाज दी—अरे कोई है ? रामकृष्ण, आनन्द ?

रामकृष्ण और आनन्द अभी सोकर भी नहीं उठे थे। उत्तर गोमती ने दिया—"क्या है होम के लिए आग वगैरह चाहिए क्या ?"

"मैं तुम्हें ही पुकार रहा था। इधर आओ, सुनो! कुछ समझ में नही आता, अब किस तरफ चला जाये। रियासत का आदेश है कि आज शाम तक इस राज्य की सीमा छोड़ दी जाये।"

"सुना तो मैंने भी है।"

"तुम्हें अपनी मातृभूमि छोड़ने में दुःख नहीं होगा ?"

"कैसा दुःख ? फिर हम छोड़ कहाँ रहे हैं, सिर्फ कुछ समय के लिए बाहर जा रहे हैं। स्थितियाँ बदलेंगी, तो फिर आ जायेंगे।"

"काश, यह सच होता गोमती! नांदगाँव को यह बलिदानी माटी, रानी सागर का यह निर्मल जल, मित्रों का भरा-पूरा परिवार, मजदूर भाई-बहनें! क्या मैं इनके बिना जिन्दा रह सकूँगा ? आज गीता-पाठ में मेरा मन नहीं लगा। श्रीकृष्ण कहते हैं निष्काम कर्म करो, फल की आकांक्षा मत करो। केवल कर्म, यान्त्रिक कर्म; कर्म के लिए कर्म अर्थात् कर्म में भी अकर्म करो। अधिकारों के लिए संघर्ष करो, महाभारत में सक्रिय भाग लो। पर आज मुझे लगा कि युधिष्ठिर की पीड़ा मिथ्या

नहीं थी। अन्तर यह है कि उन्होंने अपने स्वजनों को अपने ही हाथों मरते देखा था, मैं उन्हें केवल छोड़कर कुछ दूर जाने के लिए विवश कर दिया गया हूँ—दुर्ग या रायपुर। पर यह वियोग भी कम मर्मान्तक नहीं है।"

'हिम्मत से काम लो। मेरी ओर देखो, मैं तो इस आदेश से जरा भी विचलित नहीं हुई। आपको इस तरह समाज और देश की स्वतंत्रता के कार्यों में व्यस्त देखकर मुझे अपरिमित सुख की प्राप्ति होती है, जिसका वर्णन मैं शब्दों द्वारा नहीं कर सकती। वही मेरा भी इष्ट है।"

"इसी विश्वास के कारण तो मैं जीवित हूँ गोमती! पर तुम्हारी यह स्थिति देखकर मुझे भी कष्ट होता है। क्या मैं नहीं चाहता कि मेरी पत्नी भी अच्छे कपड़े पहने, अच्छे ढंग से रहे। घर में दो-चार नौकर हों। परिवार के साथ बैठकर भोजन करूं, सबके सुख-दु.ख का हिसाब रखूं, पर केवल इच्छाएँ··· "

"आप देश तथा समाज के इतने बड़े कार्यों में लगे हुए हैं, यही मेरा सुख है। आखिर कोई है तो जो इतने सारे लोगों के सुख-दुःख की चिन्ता में लीन है। यही सोचती-सोचती मैं घर के सारे कार्य कब कर लेती हूँ, पता तक नहीं चलता। रामकृष्ण तथा सच्चिदानन्द के कपड़े फट गये थे। कल ही मैंने तुम्हारी पुरानी खादी की धोती के दो कुर्ते सिले हैं, मैं तो बताना ही भूल गई।"

"मैंने रात ही में देख लिए थे, जब मेरे सोने के बाद रात्रि के दो बजे तक तुम सुई-धागा लेकर उन्हें सिल रही थी। मैंने टोका नहीं, सोचा, तुम्हारी समाधि भंग हो जायेगी। मैं पिता हूँ और इतना दायित्व भी पूरा नहीं कर पाया। पहले वकालत से कुछ आय हो जाती थी, पर अब इधर दो-तीन साल से वह भी पूरी तरह बन्द हो गई है। रानी साहिबा सूर्यमुखी देवी ने सन्देश भेजा था कि दीवान पद स्वीकार कर लो। पर मैंने उत्तर पहुँचा दिया था—गुलामी चाहे अंग्रेजों की हो या स्टेट की—दोनों में क्या फर्क है? फिर मेरा जन्म किसी की नौकरी

करने के लिए हुआ ही नहीं ? तुम्हारी फटी हुई साड़ियाँ और घर में नमक का भी अभाव देखकर अब लगता है कि उस पद को स्वीकार कर लेना चाहिए था।"

"आज तुम क्या कह रहे हो ? मैंने तो कभी कोई शिकायत नहीं की। मैंने तुमसे आज तक नहीं कहा कि घर के दीपक में तेल नहीं है या आनन्द आज भूखा ही सो गया है ?"

"मुश्किल तो यही है। तुमने यह गरीबी, दरिद्रता खुद ही सहन कर ली और मैं तुम्हारा जीवन-साथी होते हुए ी तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सका गोमती !"

"सुनो, ये बहुत छोटी बातें हैं। मैं नहीं चाहती कि इनमें उलझा-कर मैं तुम्हारे महान कार्यों में बाधक बन जाऊँ, तुम्हारा मन और समय खराब करूँ। तुमने अपने सबल कंधों पर हजारों-हजारों परिवारों का बोझ सँभाल रखा है तो क्या मैं एक छोटी-सी गृहस्थी नहीं सँभाल सकती ?"

"गोमती ! तुम्हारा यही साहस मेरे जीवन की मूल शक्ति है। तुम्हें देखकर मैं सब कुछ भूल जाता हूँ। तुम कितनी महान हो, इसकी अनुभूति तुम स्वयं नहीं कर सकती। मैं गीता का पाठ करता हूँ, तुम साक्षात् गीता हो, तुम्हें देखकर मैं अक्सर यही सोचा करता हूँ।"

"छोड़ो भी, आज सबेरे से तुम कहाँ की बातें सोचने लगे। बिना दूध की चाय तैयार कर दी है, दो-तीन दिनों से शक्कर समाप्त हो गई है सो गुड़ डाल दिया है, तुम पियो तब तक मैं कुछ नाश्ते का प्रबन्ध करती हूँ। आज हम लोगों को यहाँ से चलना भी है। मैं सोचती हूँ—दुर्ग ही चलें, वहाँ कुछ दिन रह भी चुके हैं, परिचित लोग हैं, ये दिन भी निकल जायेंगे। वैसे सामान कुछ विशेष नहीं हैं, चाहे तो हम रेल से चल सकते हैं। बैलगाड़ी से पैसे लगेंगे या मुफ्त में लोगों का एहसान सहना होगा।"

"तुम जैसा कहोगी, वैसा ही होगा गोमती !" कहते हुए ठाकुर

उसी दिन दोपहर की गाड़ी से वे दुर्ग आ रहे थे। उन्हें भेजने के लिए स्टेशन पर हजारों की संख्या में मजदूर उपस्थित थे। सबके नेत्र अश्रुपूरित थे। ठाकुर साहब ने अपना गला साफ करते हुए सबसे कहा था—"मैं रियासत की सीमा जरूर छोड़ रहा हूँ, पर तुम सबको छोड़ कर कहीं बाहर जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। तुम सब मुझे प्राणों के बराबर प्रिय हो। शरीर कहीं प्राण छोड़कर रह सकता है ? यह रेलवे प्लेटफार्म रियासत की सीमा का अंग नहीं है। मैं अब रोज यहीं आया करूंगा और तुम सबसे मिलकर दूसरी गाड़ी से लौट जाया करूंगा। तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। आन्दोलन अधिकारों की माँग से सम्बन्धित है। जब तक वे हमें प्राप्त नहीं होते, तब तक हम सब आंदोलनरत रहेंगे हड़ताल छोटी-मोटी दुर्घटनाओं, हत्याओं या आतंकों से टूट नहीं सकती। मजदूर अपने दिल का राजा होता है। एक दिन ये अंग्रेज और रियासती अधिकारी झुकेंगे और हमें अपनी स्वतन्त्रता और हक प्राप्त होगा। हम सब श्रमजीवी हैं, हम अपनी स्वतन्त्रता पसीना बहाकर लेंगे।" इसी बीच गाड़ी ने सीटी दी और दुर्ग की दिशा में चल पड़ी।

कुछ दिनों तक प्यारेलाल दुर्ग में रहे पर अन्ततः उन्होंने रायपुर में आकर स्थायी रूप से बसना निश्चित कर लिया। यह सन् १९२५ की बात है।

•

पन्द्रह

•

१६३०-३२ का काल। सारा देश सघन आन्दोलनों से गर्म था। जगह-जगह सभाएँ, जुलूस और पुलिस की बर्बरता। समाचार-पत्र इन खबरों से भरे रहते थे। सत्याग्रहियों को शारीरिक यातनाएँ देने में अंग्रेजी शासन पशुता की सीमा पार कर गया था। सिपाही महिला सत्याग्रहियो के केश पकड़कर मरे पशु की तरह सड़कों पर घसीटते थे। दूसरी ओर सत्याग्रही भी अपनी धुन में थे। वंदे मातरम् के उच्चारण के साथ वे ऊँचे स्वरों में गाते थे—"झंडा ऊँचा रहे हमारा। देखें, कौन निकालता पीतल कौन निकलता सोना है। रणभेरी बज उठी वीरवर पहनो केसरिया बाना। गो बैक साइमन।"

अंग्रेज सैनिकों तथा अधिकारियों को ये नारे बुलेट की तरह छेद देते। वे और अधिक उन्मत्त हो उठते और नर-नारी, वृद्ध-बाल युवक सभी का भेद भूल जाते। प्यारेलाल इस समय पिकेटिंग के कार्यों में व्यस्त थे। शराब की दूकानो पर पिकेटिंग, विदेशी माल की होलियाँ और स्वदेशी कपड़ों का प्रचार। लोग जगह-जगह उनके नाम का आल्हा गा रहे थे—

> ठाकुर अर्जुन के औतारी योद्धा प्यारेलाल सरदार,
> करें पिकेटिंग वे मदिरा की वस्त्र विदेशी देय जलाय,
> बूंद शराब न लेने देवे, ठेकेदार रहे घबराय।

ठाकुर का नाम ही आन्दोलन का पर्याय बन गया था। इसी समय अंग्रेज शासन ने किसानों पर लगान बढ़ा दिया तो ठाकुर साहब गाँव-गाँव के दौरे पर निकल गये और भाषण देने लगे—"कोई भाई न नया

पट्टा लेगा, न लगान देगा । अंग्रेजों की गुलामी और शोषण से बचने का एक ही रास्ता है— सविनय अवज्ञा आन्दोलन । शासन खुद खेती नहीं कर सकता, वह तुम्हारे पाँवों में झुकेगा । होशियार रहो, यही समय तुम्हारे जीने और मरने का है । संगठित होकर जी सकते हो । अगर बिखरे तो घास की तरह काट डाले जाओगे ।" वे सुबह से शाम तक एक गाँव से दूसरे गाँव में घूमते रहते । उनके पीछे-पीछे हजारों किसानों का मेला चलता था । अंग्रेज शासन उनके इस प्रचार-कार्य से थर्रा उठा । अधिकारियों ने मंत्रणा की—"ठाकुर का बाहर रहना अब खतरनाक सिद्ध होगा । यह आन्दोलन को शहरों से उठाकर गाँव गाँव तक फैला रहा है । यह अंग्रेजों की आय समाप्त कर रहा है । यह हम सबके विरोध में विषवमन कर रहा है । इसके विष दाँत तोड़ दिये जायें ।" तभी एक दिन अँधेरी रात में ठाकुर साहब को बंदी बनाकर सिवनी जेल भेज दिया गया । उन्हें एक वर्ष की सश्रम सजा सुनाई गई, पर गाँधी-इरविन समझौते के कारण उन्हें जल्दी ही छोड़ दिया गया ।

जेल से बाहर आकर वे फिर अपना अधूरा कार्य पूरा करने लगे । उन्होंने रायपुर के बाजार चौक में भाषण किया—

"सत्याग्रही बहनो और भाइयो ! अब युद्ध की निर्णायक बेला निकट है । अंग्रेजी शासन के पैर उखड़ चुके हैं, वह अन्तिम साँसें गिन रहा है । तुम्हारे चट्टानी साहस, धैर्य और राष्ट्रीय प्रेम के समक्ष ये व्यापारी शोषक अंग्रेज कितने दिन यहाँ ठहर पायेंगे ? बच्चों को संगीनों से छेद-कर इस देश के मातृत्व को वे भयभीत करना चाहते हैं । सत्याग्रही महिलाओं को नग्न करके, उनके केश पकड़कर सड़कों पर घसीट कर वे अपनी सभ्यता और संस्कृति का इजहार कर रहे हैं । हम जानते हैं कि स्वतन्त्रता एक बहुत बड़ा जीवन-मूल्य है । वह पैसे नहीं, खून और बलिदान माँगता है । हमारा एक-एक सत्याग्रही अपने अहिंसा-बल से हजार-हजार अंग्रेजों का मुँह बन्द करने में समर्थ है । हमें इन सड़कों पर इन्कलाब का सैलाब बहाना है, जिससे शोषण, अन्याय, अनाचार,

भ्रष्टाचार गुलामी‥‥" तभी हुआ था शान्त सभा पर चारों ओर से पाशविक लाठी चार्ज। भगदड़ मच गई, सिर फटने लगे, भागते लोगो पर गोली चालन! धांय-धांय— सारा वातावरण कोलाहल और तीखे धुएं से भर उठा। प्यारेलाल को बंदी बनाया गया। उन पर भारी जुर्माना किया गया। जुर्माना न देने के कारण उनकी सारी चल-अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गई। उनकी वकालत की सनद भी वापस ले ली गई। जेल में उन्हें चोरों, उचक्कों, डाकुओं और जघन्य अपराधियों के साथ सी·क्लास मे रखा गया।

जेल में उन्हें शारीरिक यातनाएं देने का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। जेलर के संकेतों पर भयानक पेशेवर अपराधी पहले उनकी लातों, घूसों और दांतों से बेहोश होने की स्थिति तक मरम्मत करते, जगह-जगह सारे शरीर में घाव बना दिये जाते, फिर मलहम के रूप में उनमें नमक और पिसी मिर्च छिड़क दी जाती और फिर उन्हे एकाकी काल-कोठरी में फेंक दिया जाता था चिल्लाने के लिए, दर्द से तड़पने के लिए, प्यास से किलबिलाने के लिए। पर टूटे नही थे प्यारेलाल। इससे उनकी स्फूर्ति, लगन, जन-सेवा, राष्ट्रीयता और संगठन की भावनाएं और दृढ़ हुई थी। वे बार-बार सोचते—इन अन्यायों से मुक्ति का एक ही विकल्प है— स्वतन्त्रता। गुलामी, गरीबी, असंगठन, अशिक्षा ही सारे दैन्यों, पापों और अनाचारों की जननी है। हमारा यह महाभारत आज पूरे देश में चला रहा है। चालीस करोड़ जनता एक ओर तथा मुट्ठी भर अंग्रेज एक ओर। हे कृष्ण! मेरे जीवन का रथ आज दलदल में क्यों फंसता जा रहा है? क्या तुमने योग और क्षेम का वचन नहीं दिया था? क्या तुमने अन्यायों और अत्याचारों के प्रतिकार के लिए हर युग में अवतार लेने का आश्वासन नही दिया था? पूजा के शान्त क्षणों में भी प्यारेलाल की मुट्ठियां इन बातों को सोच-सोचकर बंध जाया करती थीं।

दो वर्षों की जेल-यातना सहन कर जब वे घर पहुंचे तो सामने जर्जर गोमती को देखकर दरवाजे पर ही खड़े रह गये। उस समय माँ के पास

ही खड़े थे—रामकृष्ण और आनन्द, जिनके गालों पर आँसुओं की सूखी हुई धाराएँ दूर से दिखाई दे रही थीं। घर में सम्पत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं था। पति-पत्नी एक दूसरे को देखकर अवाक्, निस्तब्ध खड़े थे। थोड़ी देर बाद प्यारेलाल का कंठ फूटा—

"गोमती! मैं तो जेल में नित्य भोजन कर करके मोटा होता रहा, पर सच बताओ, तुमने कितने दिनों से रोटी के दर्शन नहीं किये? सच्ची सत्याग्रही तो तुम हो। मैं तो ढोंग ही करता रहा। गोमती सुबक उठी थी, पर तत्काल उसने संयम से काम लिया—

"तुम जेल की सैकड़ों यातनाओं से नहीं टूटे और अब मुझे देखकर टूट रहे हो? छिः क्या यही पुरुषार्थ लेकर तुम क्रांति के लिए खड़े हुए हो? क्या मैं जिन्दा नहीं हूँ? क्या तुम्हारे बच्चों की मैंने ठीक तरह से देख-भाल नहीं की? क्या हम सब तुम्हें इस रूप मे देखने के लिए जिन्दा रहे हैं? बोलो, उत्तर दो, चुप कैसे हो गये? क्या यह मेरा अपना अकेले का दुःख है?"

तभी वहाँ रुईकर पहुँचे थे, पर वे एक भी क्षण नहीं रुके वहाँ। तत्काल उन्होंने प्यारेलाल का हाथ पकड़ा और कहा, "इसी समय नाँद-गाँव चलना है। बात करने के लिए भी समय नहीं है मेरे पास, रास्ते में ही बातें करेंगे। क्षमा कर देना भाभी मुझे, इस समय नाँदगाँव के मज़दूरों को इनकी नितान्त आवश्यकता है। मैं तो सीधे जेल से यहाँ आ रहा हूँ। वहाँ पता चला कि अभी-अभी दो मिनट पहले ही गये थे यहाँ से।" इस बीच रुईकर के साथ प्यारेलाल गली से होकर सड़क पर आ गये थे।

गोमती की आँखों में बँधा आँसुओं का बाँध फूट पड़ा। पर तभी रामकृष्ण ने आगे बढ़कर माँ के अश्रुओं को अपने हाथों से पोंछ लिया—"छिः माँ, यह क्या! जीवन में पहली बार तुम्हारी आँखों में आँसू देख रहा हूँ?"

"ये आँसू खुशी के हैं बेटे, दुःख के नहीं। तू क्या जाने पत्नी के

हृदय को। इतने वर्षों के बाद उनसे मिलने का अवसर आया तो मैं क्या-क्या कहती रही। एक गिलास पानी के लिए भी नहीं पूछ सकी।''

"माँ! तुम्हारे हाथों का पानी पिता जी इतना अधिक पी चुके हैं कि अब वह कभी समाप्त नहीं होगा।'' रामकृष्ण ने उत्तर दिया था।

रास्ते में चर्चा रुईकर ने ही प्रारम्भ की—

"ठाकुर साहब! आपका स्वास्थ्य कैसा है? हम सब तो बहुत चिन्तित थे। सुना था जेल में···''

'मित्र! तुम लोगों को हमारी या अपनी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वस्तुतः जेल तपस्या और आत्मिक साधना के लिए बहुत अच्छा स्थान है। मुक्त आहार, व्यवहार, मन तथा इन्द्रियों के निग्रह के लिए वहाँ अच्छा अवसर मिलता है। मैंने अपना सब भाव, विचार, कार्य, तन, मन, धन ईश्वर को समर्पित कर ही दिया है, अब चिन्ता किसकी करूं? रुईकर सच कहता हूँ, मैं नित्य आनन्द हूँ। मुक्ति का उपासक हूँ। कुछ निश्चित कार्य करने के बाद ही इस शरीर का पात होगा। अभी तो मुझे इस शरीर से बहुत कार्य करने शेष हैं, जिससे पुनः जन्म लेने की जरूरत न रह जाये।''

रुईकर शान्त हो गये। उन्होंने विषय बदलते हुए कहा—"वकील साहब! आपकी अनुपस्थिति में हम सब लोगों ने मिलकर भाभी जी की कुछ मदद करनी चाही तो उन्होंने एकदम इनकार कर दिया। हम लोगों ने बार-बार आग्रह किया तो उन्होंने झिड़क दिया। कहने लगीं—"क्या समझ रखा है तुम लोगों ने मुझे? क्या मेरे हाथ-पैर नहीं हैं? क्या मैं अपने दो तीन बच्चों का पेट मेहनत-मजदूरी करके नहीं भर सकती? वे राष्ट्रीय कार्य के लिए जेल गये हैं और हम उनके नाम को कलंकित करते हुए किसी के सामने हाथ फैलायें? यह सब मुझसे नहीं होगा। इस जीवन से तो मरना बेहतर है भाई साहब!'' तब हम कुछ नहीं कह सकते थे ठाकुर साहब! मन ही मन उन्हें प्रणाम करके लौट आये थे। आखिर एक स्वतंत्रता-सेनानी की धर्मपत्नी जो ठहरीं!'' इस बार ठाकुर

साहब चुप थे। उन्होंने विषय बदला और कहा—"रुईकर! पहले मुझे मजदूर भाइयों का समाचार सुनाओ! बहुत दिनों से उनका कोई समचार नहीं मिला। अगर आज तुम न आते तो शाम तक मैं खुद नांदगांव पहुँच जाता। मेरे प्राण तो सदा वहीं रहते हैं, शरीर कहीं भी रहे।"

"मजदूरों का हाल-चाल मैं क्या, अभी थोड़ी देर में वे खुद सुना देंगे! पर वकील साहब, अब मेरा निवेदन है कि आप अपनी वकालत की सनद वापस माँग लें।"

"मैं क्यों माँगूँ जिसने छीनी है वही दे। फिर सनद कोई स्वर्ग का तोहफा तो नहीं है?"

चुप हो गये थे रुईकर साहब। उस युग में वकीलों की संख्या बहुत कम थी। फिर जिन वकीलों की सनद शासन ने छीनी हो, उनकी संख्या और भी कम थी। अनेक वकील ऐसे भी थे जिन्होंने अंग्रेजों से अपनी सनद वापस माँग ली और जेल से लौटकर फिर से वकालत करने लगे थे। ठाकुर साहब सम्पूर्ण देश के उन दो-चार वकीलों में से एक थे, जिन्होंने फिर आजीवन वकालत नहीं की और न सनद वापस माँगी।

रामचन्द्र सखाराम रुईकर को कौन नहीं जानता! वे नागपुर के प्रसिद्ध मजदूर-नेता थे और मिल के अधिकारियों ने ही उन्हे नागपुर से नांदगांव बुलवाया था। नांदगांव से निष्कासन के समय ठाकुर साहब ने पं० राजूलाल शर्मा से कहा था—"भाई शर्मा जी! मैं तो जा रहा हूँ यहाँ से, राजाज्ञा है, माननी ही होगी। अतः अब तुम देखो इन सारे मजदूरों का सुख-दुःख। तुम इन्हें मार्ग दो, शिक्षा दो और हर स्थिति में अडिग बने रहने का साहस दो। ये सचमुच भोले हैं। ये अपने जीने के अधिकार भी नहीं माँग सकते, इन्हें बच्चों की तरह समझाना पड़ता है, इन्हें यह भी बताना पड़ता है कि गुलामी चाहे जिसकी हो, मौत से बदतर होती है।" शर्मा जी ने आश्वासन दिया था · ठाकुर साहब! कर्ता आप हैं, हम तो माध्यम हैं। हाँ, मेहनत करने में कभी आलस्य नहीं करेंगे। और सचमुच पं० राजूलाल शर्मा ने मजदूरों के भीतर

अंग्रेजों के विरुद्ध जो अग्नि प्रज्वलित की, उसे सहना शासन के लिए अत्यन्त मुश्किल हो गया था। उस समय विदेशी वस्त्रों की जगह-जगह होलियाँ जली थीं, इन्कलाब के नारे लगे थे, पिकेटिंग हुई थी। पर अन्ततः मजदूर-आंदोलन ठंडा पड़ ही गया और विरोध कागजों में सिमट कर रह गया।

उन दिनों वाडिया घोड़े पर चढ़कर मजदूर-भाइयों का नेतृत्व करता था। उसके एक हाथ में लाल झंडा फहराता था। इस झंडे का उसने अपनी अंगुलियों से रक्त निकालकर टीका किया था। वह जोर से आवाज लगाता था –"हम मजदूर एक हैं। मजदूर एकता जिन्दाबाद। मजदूर एकता जिन्दाबाद। हम अपने अधिकार लेकर रहेंगे, लेकर रहेंगे। तानाशाही नही चलेगी।" उसी समय हल्का-सा लाठी चार्ज हो जाता और मजदूरों की भीड़ तितर-बितर हो जाती। आन्दोलनों का क्रम यों ही चल रहा था।

•

सोलह

•

अपनी कक्षाओं में बख्शी जी कभी-कभी साहित्य के स्थान पर इतिहास भी पढ़ाने लगते थे। एक दिन वे किसी प्रसंग पर कहने लगे—

"उस समय तक रायपुर की जनता ने न तो बिना बैल की गाड़ी देखी थी और न पवन गाड़ी। बिना बैल की गाड़ी अर्थात् रेलगाड़ी और पवन गाड़ी अर्थात् साइकिल पहली साइकिल इस अंचल में यहीं आई थी। उसे देखने के लिए वहाँ से तब हजारों लोग नाँदगाँव आये थे पैदल। उस समय सड़कें तो थीं, पर सामान्य जनता उन पर चल नहीं सकती थी। 'राजा की सड़क है रे, हट जा वहाँ से' एक बच्चा भी तब बूढ़ों को रोक देता था। सड़क पर से तब बैलगाड़ी भी नहीं जा सकती थी। काँवर में चावल और मुठिया में आग लेकर किसान तब

सड़क के किनारे-किनारे ही चलते थे। पर यह पवन गाड़ी—'बिना धुआं और बैलों की गाड़ी तो राजा की बराबरी करती है रे।" एक ने कहा तो दूसरे ने उत्तर दिया—"आ गया नौघट कलियुग, बाबा तुलसीदास ने लिखा है कि जब ऐसे अपशकुन होने लगें तो समझ लेना नाश होने वाला है।" उस दिन नांदगांव से रायपुर आई पहली पवन-गाडी को देखने के लिए सड़कों पर अपार भीड़ थी। बच्चे, बूढ़े, जवान और घूंघट डाले नववधुएं खड़ी थी सड़क के किनारे। साइकिल टिन-टिन करती हुई आगे-आगे भाग रही थी और उनके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे हजारों जवान, बूढ़े, बच्चे, औरतें।"

उसी दिन रायपुर में छत्तीसगढ़ के सारे राजागण इकट्ठे हुए थे—एजेन्ट ने बुलाया जो था। उसने राजाओं की सभा में कहा था—"सम्बलपुर से रायपुर तक बार-बार आना, घोड़ा पर या बग्गी में बैठकर यह प्रशासन के हित में नही है। बहुत समय लग जाता है। अतः मैं सोचता हूँ कि अब यहीं हेडक्वार्टर बनाया जाये। इसके लिए हमने एक योजना बनाई है—रायपुर को विकसित करने की। आप सब लोगों को हम यहां मुफ्त में जमीनें दे रहे हैं। अतः आप सब अपनी-अपनी कोठियां यहां बनवायें और सम्मिलित रूप से यहां पानी तथा बिजली की व्यवस्था कराने में योगदान दें। नगर के विकास के लिए ये बुनियादी आवश्यकताएं हैं। केवल पानी के लिए नल व्यवस्था पर तीन-चार लाख रुपये खर्च होंगे, इसके लिए आप लोग पहले चन्दा जमा करें।"

राजागण एक दूसरे का मुंह ताक रहे थे। तीन-चार लाख रुपये कहाँ से आयेगा! सब चुप। सभा में गहन शान्ति थी। एजेन्ट ने फिर अपनी बात दुहराई। तभी एक नवयुवक खड़ा हुआ और कहने लगा—"इस तरह भीख क्या मांग रहे हो, यहां पानी का प्रबन्ध अकेले हम करेंगे।"

सब विस्मित हो गये थे। इतना-सा छोकरा राजा, इतनी बड़ी बातें। अंग्रेज एजेंट मि० एक्स को भी आश्चर्य हुआ था। उन्होंने कहा—

"यंग ब्याय, थिंक इट अगेन।"

"इसमें फिर से सोचने की क्या बात है ?" तापक से उत्तर दिया था उसने। शर्त केवल यह रहेगी कि उस वाटर वर्क्स का नाम मेरी माँ के नाम पर रहेगा—श्रीमती जोधकुँवर बाई वाटर वर्क्स।"

"मुझे स्वीकार है।" पोलीटिकल एजेन्ट ने कहा। उस राजा का नाम था - बलरामदास।

छत्तीसगढ़ अंचल के पहले समाचार-पत्र 'प्रजा हितैषी' ने दूसरे ही दिन समाचार छापा—"नांदगाँव का राजा इतना बड़ा दानवीर, रायपुर की जनता को तो पिला रहा है शुद्ध शीतल जल और अपने राज्य की जनता को पिलाता है कीचड़ और मलमूत्र।"

मोटे-मोटे टाइप वाले इस शीर्षक से राज्य में तहलका मच गया था। राजभवन में बलरामदास इधर से उधर और उधर से इधर तेजी से पैर पटकते हुए घूम रहे थे।

"·····माँ ! मैं नहीं जानता था कि यह सारंगपाणि इतनी नमक-हरामी करेगा। मेरा प्रेस, मेरा पेपर और मेरी ही इतनी कड़ी आलोचना ? यह असह्य है। मैं अभी उसे बरखास्त करूँगा···"

"धैर्य रख बेटे ! ब्राह्मण आदमी है। बुलाकर पूछ लो, क्या बात है ? क्या इच्छा है उसकी ?" राजमाता ने कहा।

तभी सारंगपाणि को लेने के लिए डोली भेजी गई बलरामदास ने अपने कारिंदे को हुक्म दिया—"सारंगपाणि जिस स्थिति में हों, उन्हें लेकर आओ।"

सारंगपाणि तब नागपुर से रायपुर और जगदलपुर के आन्तरिक प्रदेशों के बीच ऊँटों की गाड़ियों के माध्यम से यातायात की व्यवस्था करते थे। उनके द्वारा इन नगरों तथा गाँवों में डाक तथा तार वितरण का ठेका भी प्रारम्भ किया गया था। बलरामदास के पिता महन्त घासीदास के वे प्रमुख परामर्शदाता थे और स्वतन्त्र रूप से लकड़ी, घास आदि के ठेके भी चलाते थे तथा बीड़ी, जूते, साबुन, सोडा आदि के बड़े बड़े कारखाने भी चला रहे थे। उनका माल दूर-दूर तक जाता

था। नांदगांव में भूलनबाग तथा बलदेवबाग की रचना में आपकी ही कला और कल्पना प्रमुख रही है। उस समय पूरे मध्यप्रदेश में नागपुर, खण्डवा तथा जबलपुर में केवल तीन प्रेस थे। चौथा राजा साहब के सहयोग से सारंगपाणि ने नांदगांव में स्थापित किया था—बलराम प्रेस। कपड़े पर कलात्मक छपाई के लिए यह प्रेस तब पूरे देश में प्रसिद्ध हो गया था। यहीं से सारंगपाणि ने निकाला था छत्तीसगढ़ अंचल का पहला समाचारपत्र—"प्रजा हितैषी" भारत में जिस समय नगरपालिका के नियम अस्तित्व में नहीं थे तब नांदगांव में देश की पहली नगर-पालिका स्थापित की गई थी, जिसके अध्यक्ष थे राजा बलरामदास तथा अवैतनिक सचिव सारंगपाणि। नांदगांव में सारंगपाणि का घर इस अञ्चल की समस्त साहित्यिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था। सारंगपाणि ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने छत्तीसगढ़ की ओर से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लखनऊ अधि-वेशन में प्रतिनिधित्व किया था।

उस दिन सारंगपाणि सबेरे-सबेरे पूजा-पाठ करके उठे ही थे कि डोली दिखाई दी। वे समझ गये। राजा ने बुलाया है। वे बिना कुछ पूछे ही डोली में बैठ गये। राजभवन में पहुँचकर उन्होंने महाराजा को अभिवादन किया पर उसका उत्तर देने के पहले ही बलरामदास ने पूछा—"क्यों सारंगपाणि! 'प्रजा हितैषी' में यह कैसा समाचार!" कहते हुए उन्होंने वह अखबार उनकी ओर फेंका।

"ठीक तो लिखा है महाराज इसमें। नांदगांव की सारी जनता तो उसी भरकापारा के ठाकुर दइया और बूढ़ासागर का सड़ा पानी पी रही है, जिसमें दिन भर जावर मलमूत्र करते रहते हैं और रायपुर की जनता के लिए आप वाटर वर्क्स बनवा रहे हैं। यहाँ की जनता के लिए एक कुआँ ही खुदवा देते।"

"ठीक कहते हो सारंगपाणि तुम। सचमुच मैं अंधकार में था। पर अब रायपुर के लिए तो वचनबद्ध हो गया हूँ। इतनी जल्दी तो यहाँ अब नल नहीं लग सकते।"

"न सही जल्दी एक- दोवर्षों के भीतर सही।"

राजमाता जोधाकुँवर बाई भी इन दोनो की बातें परदे की ओट से सुन रही थी। उन्होंने बलराम से कहा — 'बेटे ! तुम अभी ज्योतिषी पं० सूरज लाल झा को बुलाओ। मैं खुद इस कार्य को पूर्ण करने का संकल्प लूँगी। नांदगांव में बलरामदास वाटर वर्क्स बनेगा।"

उसी समय एक डोली फिर तेजी से राजभवन से बाहर गई और थोड़ी ही देर में पं० सूरज लाल झा को लेकर लौटी। राजमाता ने नारियल, सोने का सिक्का, तुलसी दल और चावल हाथ में लेकर संकल्प किया कि नांदगांव की जनता के लिए हैं मैं दो वर्षों के भीतर वाटर वर्क्स बनाऊँगी। पं० झा ने मंत्र पढ़कर वह संकल्प ग्रहण किया। तब सारंगपाणि विजयी की मुद्रा में लौटे थे राजमहल से।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही राजमाता जोधकुँवर बाई ने १०८ काठा सोने के सिक्के नपवाकर उनका ढेर आँगन में लगवा दिया; उस पर तुलसीदल और पुष्प डाले और बलरामदास तथा राजपुरोहित को बुलवाकर कहा—"यह धनराशि मे इस राज्य की जनता की भलाई के कार्यों मे खर्च करना चाहती हूँ।" तभी बलराम के मन में सूती कपड़े की मिल की स्थापना का विचार कौंधा। वे कई दिनों से सोच रहे थे कि ऐसा कुछ करना चाहिए जिससे यहाँ की जनता स्वावलम्बी बन सके, कृषि पर उसकी निर्भरता कम हो और उद्योग के क्षेत्र में भी इस नगर का विकास हो। उन्होंने बम्बई तथा गुजरात के कई नगरों में सूती कपड़े की मिलें देखी थी। उनका मन बार-बार कहता था कि ऐसी ही एक मिल यहाँ होनी चाहिए। छुई खदान और कवर्धा की पट्टी में कपास की खेती भी होती है; फिर बरार भी यहाँ से कितनी दूर है, आवश्यकता पड़ने पर कपास वहाँ से भी लाया जा सकता है। आज सामने विपुल और संकल्पित धनराशि देखकर उन्होंने अपना विचार दृढ़ कर लिया और नागपुर जाकर उन्होने अपना मन्तव्य पोलीटिकल एजेन्ट के सामने रखा।

"क्या बचकाना मजाक करते हो राजा साहब ! पहले दो-चार

सूती मिलों की विशालता देख आओ, फिर बात करना।" एजेन्ट ने बलरामदास से कहा।

तब बलराम बम्बई और अहमदाबाद की कुछ मिलों को देखने के लिए गए। जितना वे देखते, उनका मन और सुदृढ़ होता जाता। एक माह घूमकर वे नागपुर लौटे और फिर एजेन्ट से मिले। उन्होंने कहा—

"मैं पचासों मिल देखकर आया हूँ। नांदगांव में अब सूती कपड़े की मिल जरूर खुलेगी।"

"पर, बड़ी-बड़ी मशीनें कैसे ले जाओगे वहाँ तक ?"

"रेल द्वारा ?"

"रेलवे लाइन वहाँ तक है भी ?"

"नागपुर से नांदगांव तक रेलवे लाइन बिछा दी जायेगी और तभी छत्तीसगढ़ पेनिनसुला रेलवे की नीव पड़ी थी। रेल की पटरी ठीक बी० एन० सी० मिल के दरवाजे के पास समाप्त होती थी। कलकत्ता से नांदगांव को तो बहुत बाद में जोड़ा गया।

बलरामदास ने एक शर्त एजेन्ट के सामने रखी। रेलवे लाइन तो बन ही जायेगी और मिल भी खुल जायेगी। पर भविष्य में कभी कोई दूसरी मिल नागपुर से लेकर बंगाल तक इस ट्रंक पर नहीं खुलनी चाहिए। बंगाल से नागपुर तक हमारी अकेली मिल रहेगी—"सी० पी० मिल लिमिटेड।" आज भी उस शर्त के अनुसार इस ट्रंक पर कोई दूसरी मिल्स प्रारम्भ नहीं की गई है।

१८९४ ई० में मिल की नींव रखी गई। रात-दिन के परिश्रम से वह कुछ ही दिनों में चालू भी हो गई। दूर-दूर से कुशल मजदूर आने लगे। कपास की खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। अच्छी खेती के लिए पुरस्कार भी दिये गये। पर उस दिन तो गजब हो गया जब एक मिस्त्री ने कहा—"महाराज! मोबीआइल में गाय की चर्बी मिली रहती है।"

"गाय की चर्बी ?"

"जी !"

"पहले क्यों नहीं बताया ? क्या बिना मोबीआइल के मिल नही चल सकती ।"

"नही महाराज !"

"तो उसे बन्द कर दिया जाये, पर अब गाय की चर्बी से मिल नही चलेगी ।"

इधर से उधर, उधर से इधर–परेशानी में फंस गये थे बलरामदास। उन्होंने तत्काल डोली भिजवाकर एक बार फिर सारंगपाणि को बुलवाया और पूछा—"सारंगपाणि ! क्या बिना मोबीआइल के अपनी मिल चल सकती ?"

"मशीनें चलाने के लिए आइल की जरूरत तो पड़ेगी महाराज ।"

"अगर यही बात है तो फिर नारियल के तेल से भी मशीनें चल सकती हैं ।"

"नारियल का तेल बहुत मँहगा पड़ेगा महाराज !"

"मैं मँहगे और सस्ते की बात नही पूछ रहा। हाँ या ना मे उत्तर दो !"

"यह बात तो इंजीनियर को बुलाकर पूछनी होगी ।"

"इंजीनियर को तत्काल बुलाया गया और मैनेजर को भी। महाराज ने आदेश दिया—"अब मिल नारियल के तेल से चलाई जाये। इसके लिए तत्काल नारियल के तेल की व्यवस्था की जाये। जितना आवश्यक हो खरीदा जाये पर मोबीआइल से मिल न चले ।"

"जो आज्ञा महाराज !" कहकर मैनेजर तथा इंजीनियर लौट आये थे ।

तेल के भारी खर्च से मिल्स घाटे में चलनी शुरू हो गई। इसी बीच १८९६ मे बलरामदास का निधन हो गया। मिल्स का घाटा हर वर्ष बढ़ता गया और १९०६ में इसे एक अंग्रेज सावालिस कम्पनी ने खरीद लिया और उसका नया नाम रखा—"बंगाल नागपुर काटन मिल्स ।"

सावालिस कम्पनी में राजा बलरामदास के नाम से लाखों के शेयर खरीदे गये। अतः इसे बेचते समय शर्त यह रखी गई कि इसमें बनने वाले कपड़े पर राजा छाप मार्का रहेगा तथा उत्पादित कपड़े का कुछ प्रतिशत नांदगाँव के राजा, रानी या उत्तराधिकारियों को मुफ्त में देना होगा। इसी कपड़े से रानी सूर्यमुखीदेवी का गोदाम सदा भरा रहता था और वे हर तिथि, हर पर्व और पूजन के अवसर पर गरीब जनता तथा ब्राह्मणों को रुपये पैसों के साथ-साथ जनाना और मर्दानी धोतियों का दान भी दिया करतीं थीं।

अंग्रेजों के हाथ में आते ही मिल्स में मजदूरों के शोषण का इतिहास प्रारम्भ हो गया। पर इस शोषण और अत्याचार से तुम्हें अभी क्या लेना-देना, अभी तो तुम्हारा काम है मन लगाकर पढ़ना।

"मास्टर जी ! यह कुंज बिहारी कहता है कि छात्रों को राजनीति तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों में खुलकर भाग लेना चाहिए, हर स्तर पर शोषण तथा अत्याचार का विरोध करना चाहिए और आप कहते हैं कि छात्रों का प्रमुख काम है मन लगाकर पढ़ना। किसकी बात सही है ?" कन्हैयालाल ने बख्शी जी से प्रश्न किया।

'कन्हैयालाल ! मैं जो कहता हूँ वह भी सत्य है और कुंजबिहारी जो कहता है वह भी झूठ नहीं है। तुम जानते हो, मैं कथा के क्षेत्र में जिन्दा रहने वाला आदमी हूँ। इसी प्रसंग पर एक कहानी याद आ गई—कहानी टालस्टाय की है।

एक बार एक राजा के मन में तीन प्रश्न उठे—कार्य प्रारम्भ करने का सबसे अच्छा समय कौन-सा है ? सबसे महत्वपूर्ण कार्य कौन-सा है ? और सबसे महत्वपूर्ण आदमी कौन-सा है ? उसने ये तीनों प्रश्न अपने दरबार में मंत्रियों के सामने प्रस्तुत किये। हर व्यक्ति ने इन प्रश्नों के उत्तर अलग-अलग ढङ्ग से दिये, पर राजा को किसी के उत्तर से संतोष न हुआ। अतः वह अपने युग के एक महान संत के आश्रम में गया। उस समय वह संत अपने हाथ में एक कुदाली लेकर खेत गोड़ रहा था।

राजा ने अपने आने का प्रयोजन सुनाया और अनुमति लेकर वे प्रश्न उसके सामने रखे। संत ने कहा — 'राजन मैं थोड़ी देर में लौटकर आता हूँ। आप तब तक इस कुदाली को अपने हाथ में लेकर खेत गोड़ना प्रारम्भ कीजिए। राजा ने कुदाली हाथ में ली और उस खेत को गोड़ना प्रारम्भ किया। वह संत गया तो फिर तीन-चार घंटों तक लौटा ही नहीं। इसी बीच एक रक्त-रंजित आदमी दौड़ता हुआ आया और राजा के चरणों में गिर कर प्रार्थना करने लगा—मुझे बचाइये, मुझे क्षमा कर दीजिए राजा ने उससे सारी बातें निडरतापूर्वक करने का आदेश दिया और यह आश्वासन भी दिया कि उसके रहते अब कोई उसका कुछ नहीं कर सकता। तब उस आदमी ने बताया कि वह राजा साहब का एक पुराना शत्रु है तथा बहुत दिनों से उन्हें जान से मारने के लिए घूम रहा था। आज मैं एक झाड़ी में छिपकर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था कि आपके रक्षकों ने मुझे देख लिया और मुझ पर घातक हथियारों से आक्रमण कर दिया। अब मैं घायल स्थिति में आपके समक्ष खड़ा हूँ, आपसे अपने प्राणों की भिक्षा माँग रहा हूँ। राजा ने उसे अभयदान किया और उसकी चिकित्सा की व्यवस्था कर दी। उसी समय वह संत लौटकर वहाँ आया। राजा ने कहा—"महाराज! लौटने में काफी विलम्ब कर दिया। अब मेरे प्रश्नों के उत्तर देने का कष्ट करेंगे। मुझे लौटना भी है।"

'प्रश्नों के उत्तर ? वे तो आपको दिये जा चुके हैं।" संत ने कहा।

"कब ? कहाँ ? किसके द्वारा ?" मैं कुछ समझ नहीं सका।

संत ने हंसकर कहा—"वर्तमान से अधिक उत्तम समय अन्य कोई भी नहीं होता। अतः जो भी कार्य प्रारम्भ करना है, उसे तत्काल करना चाहिए। इसी तरह जो कार्य आपके हाथ में है, उससे महत्वपूर्ण दूसरा काम नही हो सकता। अतः उसे पहले पूरा करना चाहिए और जो व्यक्ति आपके सामने है, वही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, अन्य कोई नहीं।"

राजा ने संतोष की एक गहरी सांस ली ।

"क्या अब भी तुम्हारे किसी प्रश्न का उत्तर शेष है कन्हैयालाल ?" बख्शी जी ने प्रश्न किया । कन्हैयालाल ने कोई उत्तर नहीं दिया तो बख्शी जी ने विषय बदलते हुए कहना प्रारम्भ किया—"यह संसार विचित्रताओं से भरा है, साहित्य तथा जीवन में वैचित्र्य से ही सरसता का संचार होता है । मैं "सरस्वती" के सम्पादन-काल में बहुत घूमा हूँ । अपने देश के महानगरों में महीनों रहा हूँ । विद्या की नगरी काशी में भी रहा और प्रयाग में भी । पर मुझे जो सुख और शान्ति खैरागढ़ तथा राजनांदगांव की धरती पर मिली, वह अन्यत्र नहीं ! नांदगांव की मिट्टी में ऐसी ही कुछ विचित्रता है कि यहाँ आकर मेरा मन फिर और कहीं जाने को उत्सुक नहीं होता, मुझे लगता है, चन्द्रकांता संतति का मायालोक यहीं है ।"

यह नगर उद्यानों और तालों का नगर है । सुन्दरता की दृष्टि से यह मध्य प्रदेश का पेरिस कहा जाता रहा है । फिर इसी नगर से इस अंचल में कला, संस्कृति और क्रान्ति की चिनगारियाँ भी प्रज्ज्वलित हुई है । इस देश में मजदूर-आन्दोलन की नींव सबसे पहले इसी नगर में १८ ० के आसपास रखी गई थी ।"

"मास्टर जी ! हम लोग उस इतिहास को भी जानना चाहते हैं !" कुंजी के साथ-साथ लड़कों ने खड़े होकर कहा ।

"बच्चों ! इतिहास में जीवन की असली शक्ति होती है, वह हमें एक सुदृढ़ भूमिका भी प्रदान करता है और आगे बढ़ने का संकल्प भी ! वह हमें अपनी भूलों को परिमार्जित करने का अवसर भी देता है और हमारे संस्कारों की रचना भी करता है । वस्तुतः जिसे हम सांस्कृतिक चेतना कहते हैं, वह एक प्रकार से ऐतिहासिक चेतना का ही दूसरा नाम है । हमारा इतिहास है, इसीलिए हम उन्नत और गौरवशाली हैं । हमने कभी इस देश में स्वतंत्रता का पावन काल देखा है, इसीलिए उसे लौटाने के लिए हम संघर्षशील भी हैं । ऐतिहासिक चेतना की यही संजीवनी

साहित्य में अवतरित होती है। रामचरितमानस उसी की अभिव्यक्ति है, रवीन्द्रनाथ, बंकिमचन्द्र चटर्जी, शरच्चन्द्र और प्रेमचन्द्र का साहित्य उसी पीठिका पर रचा गया है। पर मैं तो बात कर रहा था अपनी मिट्टी की।" बख्शी जी भावनाओं में खोते जा रहे थे और छात्र मन्त्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुन रहे थे।

"भूलन बाग! कभी स्वर्ग था इस अंचल का, मैंने उसकी एक झलक मात्र देखी है। मैं नहीं सोच पाता कि नन्दनवन और किसे कहा जाता होगा! देश-विदेश के दुर्लभ पौधे लगवाये थे राजा बलराम ने उसमें और नीले कमलों से खिले हुए कुंड के चारों ओर राहों की वह भूल भुलैया तैयार की गई थी कि लोग याद ही नहीं रख पाते थे कि वे किस मार्ग से कुंड तक पहुँचे थे और अब किस मार्ग से बाहर निकलें। एक से खिले हुए इन्द्रधनुषी फूल, लताओं का कटाव भी एक जैसा? एक जैसे गेट, एक जैसी महकती हुई सुगन्ध। फिर हो क्यों न? रानी सूर्यमुखी की सौन्दर्य-कल्पना ने अपना साकार रूप धारण किया था उस बाग मे। वे उसकी एक-एक फूल-पत्ती की देखरेख करती थीं और स्वयं बलरामदास इस बगीचे की देखरेख के लिए पूना रेजीमेंट के सबसे बड़े गार्डनर को अंग्रेजों से माँगकर अपने साथ नांदगाँव लाये थे। वे खुद उसे गार्डनर साहब कहते थे। ये गार्डनर साहब दिन भर कभी बोगनवेलिया की सुन्दर कमानी को संवारते और कभी वारटएपल, चालता, कटहल, रामफल, आमड़ा, अमरूद, बाटलब्रश के फूलों से बातें करते। कभी वे सुपारी, रक्तचन्दन, अंजीर, इलायची, दालचीनी, लौंग और डिकामाली के पौधों की छाया में एक क्षण रुकते और फिर मोरछल्ली, कदंब, लीची, मैंगास्टीन, शतावर, रेलवे कीपर, सिल्वर ओक, मदनमस्त, गुलमोहर और यूकेलिप्टस की शाखाओं को झुकाकर उनसे मन्द-मन्द बातें करते। उसी समय केवड़े की सुगन्ध का झोंका सारे वातावरण को मस्ती से भर देता। पर जिस समय रानी सूर्यमुखी देवी बाग में सैर करने जातीं या अपने लिए बने हुए विशेष स्नान-घाट पर रानी सागर

में स्नान करने आतीं उस समय झूलनबाग में गार्डन साहब भी नहीं रहते थे। इस समय मन्द मलय से प्रेरित होकर लतायें रानी साहिबा के चरण चूमने लगतीं और कलिकायें उनके मार्ग में पराग बिखेर देती थीं।

जब रानी साहिबा का प्रसंग आ ही गया तो मै बता दूं कि रानी सूर्यमुखी देवी सुन्दरता में दूसरी पद्मिनी कही जाती थीं। उनकी एक झलक देखने के लिए तब राजभवन से कुछ दूरी पर अंग्रेज एजेन्ट और कमिश्नर अपने पूरे लश्कर के साथ तम्बू गाड़कर महीनों तक पड़े रहते थे। उस समय रानी सागर नहीं था। वहाँ था एक सपाट मैदान। अंग्रेजों की कूटनीति को भांप गये थे बलरामदास जी। अतः उन्होने रातों-रात हजारों मजदूरों को लगाकर तालाब खुदाने का काम आरम्भ कर दिया। इस कार्य के ठेकेदार थे—पं० शिवरतन मिश्र, (डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र के पितामह)। तालाब गहराता गया, फैलता गया, रात-दिन काम चल रहा था पर मजदूरों के लिए पैसे ? मजदूरों ने उत्तेजित होकर ठेकेदार का घिराव कर दिया। मिश्र जी ने कहा—"हमें राजा साहब से पैसे ही नहीं मिले, हम कहाँ से दे। उन्होंने मुझे आदेश दिया—काम प्रारम्भ करो और हमने काम आरम्भ कर दिया। अब जब वे पैसे देंगे तुम लोगों में बाँटे जायेंगे। अगर तुममें हिम्मत है तो चलो मेरे साथ। मैं तुम सबके आगे-आगे चलता हूँ। उन्होंने अपना सोंटा हाथ में लिया और चल पड़े राजभवन की ओर। उधर हजारों मजदूर अपने कंधों पर कुदाली, गैंती फावड़ा लिए और महिलाएं हाथ में तसले और टोकनी लिए—नारे लगाती हुई नांदगांव की गलियों में घूमने लगीं।

"यह क्या तमाशा है पं० मिश्रा जी !" बलरामदास ने तत्काल उन्हें राजभवन में बुलाकर पूछा।

"मजदूर खाने के लिए अनाज और पैसे मांग रहे हैं।"

"क्या मांगने का यही वक्त है।"

"महाराज इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं रह गया था।"

"क्या मतलब ?"

"मैंने सैकड़ों बार खजांची से निवेदन किया कि पैसे दे दो पर उसने हर बार एक ही उत्तर दिया—"खजाने में पैसे नहीं हैं, कहां से दे ?"

"लगता है, इस आन्दोलन में तुम्हारी ही बुद्धि काम कर रही है। ठीक है जाओ, मजदूरों से कहो, काम करें। आज शाम तक उन्हें सारा पैसा मिल जायेगा।"

"महाराज की जय हो कहते हुए मिश्र जी तब राजभवन से लौटकर मजदूरों के पास पहुँचे। उस समय मजदूर किले के सामने बड़ और पीपल के नीचे खड़े होकर नारे लगा रहे थे—"हम भूखे हैं, हमें मजदूरी दी जाये। हमारा शोषण बन्द किया जाये।"

पं० मिश्र ने उत्तेजित मजदूरों को शान्त किया था और इस तरह देश का पहला मजदूर आन्दोलन समाप्त हो गया था।

तालाब खुद गया, उसके घाटों को पत्थरों द्वारा कलात्मक ढङ्ग से बाँध दिया गया। उसमें रानी के स्नान के लिए एक विशेष घाट बनाया गया। उसके ऊपर एक मंच भी बनाया गया जहाँ खड़े होकर रानी सागर में डूबता हुआ सूरज देखा करती थीं। यहाँ से अस्तमित सूर्य आज भी ऐसा लगता है जैसे कोई हंस पानी में धीरे-धीरे पंख खोलकर तैर रहा हो। पर उस समय रानी सागर में पानी था कहाँ ? पानी तो 18 मील दूर टप्पा के उड़ार बाँध से रातों रात नहर खोदकर रानी सागर तक लाया गया था। हजारों लोग नहर के किनारे खड़े होकर पानी से भरते हुए रानी सागर को रात दिन देखते रहते थे। वहाँ कुछ औरतें दूसरे के कान में धीरे से कहतीं—"राजा ने भरा बाँध फोड़ा है, देख लेना अपशकुन होगा !"

रानी सूर्यमुखी ने अपने हाथ से एक मछली को सोने की नथ पहनाकर उसे रानीसागर में छोड़कर इस ताल का उद्घाटन किया था। फिर तो हर वर्ष एक नयी मछली को सोने की नथ पहनाकर छोड़ा

जाता रहा। तब बहुत कड़ा प्रतिबन्ध था। कोई भी व्यक्ति इस तालाब में कपड़े नहीं धो सकता था। यदि उसे नहाना है तो बाल्टी में भरकर पानी किनारे से दूर ले जाता था। तभी तो इसका जल दर्पण की तरह साफ, शीतल और मोती की तरह उज्ज्वल दिखाई देता था। सोने की नथ वाली मछलियों को देखने के लिए तब बच्चों, बूढ़ों और जवानों की भीड़ दिन भर लगी रहती थी। अनाज के थोड़े से दाने पानी में डाले और झुंड की झुंड मछलियां ऊपर तैरती दिखाई देने लगीं। समृद्धि के वे दिन कुछ और ही थे।

तभी बीच में कुंजबिहारी ने कहा—"मास्टर जी ! क्या यह सामन्तवादी पद्धति का यशोगान नहीं है ?"

"तुम कुन्जी !" बख्शी जी चौंके थे।

"जी, क्या सामन्तवाद और साम्राज्यवाद गले से चिपकाये रखने लायक हैं ?"

कुन्जी ! मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। तुम्हारे राजनीतिक गुरु प्यारेलाल जी को और अच्छी तरह जानता हूं। तुम दोनों में अन्तर यह है कि प्यारेलाल सौम्यवादी हैं और तुम उग्रवादी। मैं यह स्वीकार करता हूं कि सामन्तवाद, साम्रज्यवाद ये प्रजातन्त्र की विरोधी पद्धतियां हैं। पर यह तो हमारा और आपका इतिहास है, अतीत है, उसे काटकर जीवन से अलग नहीं किया जा सकता।"

"मास्टर जी ! नासूर से किसी को प्रेम नहीं करना चाहिए।"

"कुन्जी ! मैं तुमसे क्या कहूँ, मेरे प्रिय हो, निकट हो, कवि हो, स्वप्न-सृष्टा हो, भगवान तुम्हें तुम्हारी मन्जिल तक पहुँचाये। यही शुभ-कामनाएँ हैं।"

"आपका आशीर्वाद ही चाहिए मास्टर जी हमें।"

"कुन्जी ! गुरु अपने छात्रों को अपना आसीर्वाद अपने रोम-रोम से देता है और उसे वही छात्र अधिक प्रिय भी होता है जो लीक से हटकर नया रास्ता खोजने के लिए कृतसंकल्प हो। इतिहास की सबसे बड़ी सार्थकता यही है कि वह भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाता है, दुर्बल-

शाएँ समझता है। पर ध्यान रखना, मात्र इतिहास से कभी किसी को गौरव नहीं मिलता, वह तो अपने कार्यों से अर्जित किया जाता है।"

इसी समय तो हुआ था वह हादसा। सहसा उसी कक्षा में प्राचार्य के साथ एक अंग्रेज अफसर ने प्रवेश किया। कुन्ज बिहारी अपनी कक्षा का मुखिया था। उसने छात्रों को आदेश दिया—"स्टैन्ड अप, वन्दे मातरम्।"

"वाट्स दिस वंदे मातरम्! दिस इज यूवर डिसीप्लिन प्रिंसिपल!" अंग्रेज ने पूछा और तभी कुन्जी को प्राचार्य ने बेंतों से तड़ातड़ पीटना प्रारम्भ कर दिया। कुन्जी भी जीवट का छात्र था। उसकी हथेलियों की चमड़ी जगह-जगह से फट गई, रक्त की धाराएँ बह निकली, बेंत टूट गया पर वह गर्व से मुस्करा रहा था। न आह की, न हाथ पीछे किये। प्राचार्य जब मारते-मारते थक गये और लौटने लगे तो उसने कहा था—"वंदे मातरम् सर।"

क्रोध से अभिभूत प्राचार्य तब इस अपमान की ज्वाला मे बुरी तरह आहत हो गये थे और जाते-जाते उन्होने कहा था—"यू कुन्जी! आई विल रेस्टीकेट यू। तुझे शाला से निकालकर ही रहूँगा।"

तभी बीच में बख्शी जी ने कहा था—"महोदय! आज वंदे मातरम् कौन नहीं कह रहा है। इस पर इतना क्रोधित होने की आवश्यकता नही है। मैं इस कुन्जी को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ! सीधा, सरल लड़का है, लड़कपन भी है। इसका उद्देश्य आपको अपमानित करना या पीड़ा पहुँचाना नहीं था। यह तो पूरे देश के स्वर को मुखरित कह रहा था।"

किन्तु कुन्जी शान्त रहने वाला छात्र था ही नहीं। १५ अगस्त के दिन अलस सुबह उसने शाला के प्रांगण मे फहराते हुए यूनियन जैक को उतारकर जमीन पर फेंक दिया और तिरंगा झन्डा फहरा दिया। इस खबर से पूरे शहर में तहलका मच गया था। अंग्रेज पोलीटिकल एजेन्ट, एस० पी०, थानेदार, सैकड़ों सिपाही सब स्टेट हाई स्कूल के बरामदे में खड़े थे और हर छात्र से पूछा जा रहा था—यूनियन जैक किसने

उतार कर फेंका ?' तभी कुन्जी ने आगे बढ़कर कहा था—"यह मेरा कार्य है। दूसरों को डराने-धमकाने की जरूरत नहीं है।"

"तुम इसका परिणाम जानते हो कुन्ज बिहारी ?"

"यह तो किसी एक दिन होना ही था और रहा परिणाम तो सुन लो—मृत्युदण्ड से बड़ा और कोई दण्ड नहीं हो सकता। मैं उसे भी स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ। गुलामी के धुंएँ में घुट-घुटकर जीने की अपेक्षा स्वाधीनता की एक चिनगारी सुलगाकर मरना बेहतर है। सारी शिक्षा का सारतत्व यही है और यही होना चाहिए।"

तभी एस० पी० ने कुन्जी को बेतों से पीटना आरम्भ कर दिया। बेतों के साथ उसके शरीर की चमड़ी और मांस भी चला आता था। खून फव्वारे की तरह उछल रहा था, पर एक कराह तक नहीं निकली थी उसकी जबान से। एस० पी० ने सबके सामने उसे बेहोश होने की स्थिति तक पीटा था और बाद में उसे जेल भी भिजवा दिया था। कुन्ज-बिहारी को मार पड़ने के कारण नगर में दंगा न हो जाये, इसलिए पूरे शहर में मार्शल ला भी लागू कर दिया गया था।

रायपुर में जब प्यारेलाल ठाकुर को इस काण्ड की सूचना मिली तो उन्होंने अपनी इतनी प्रतिक्रिया व्यक्त की—"कुन्जी मेरा शिष्य है। वह टूटना जानता है, पर झुकना नहीं।"

□

सत्रह

□

उस दिन मिल के दरवाजे पर महिला-मजदूरों ने धरना दे दिया। "भीतर आना है तो हमारे शरीर को कुचलते हुए निकलो।" सुमित्रा ने चिल्ला कर कहा। अधिकारी सन्न, भीतर जायें तो कहाँ से ? और नहीं जाते तो कर्मचारी कहेंगे कि हड़ताल में वे लोग भी शामिल थे। बीच-बीच में नारे लग रहे थे—"हम मजदूर एक हैं।" "मजदूर एकता

जिन्दाबाद'' हम अपने अधिकार लेकर रहेंगे, लेकर रहेंगे'', ''ताना-शाही नहीं चलेगी।'' और जब नारे बन्द होते तो सुमित्रा का मधुर स्वर सुनाई देता—''हमला नचाये तैं बेंदरा बरोबर, बन गये तेंहर मदारी ओ···तेहर ठग डारे हमला रे गोरा····''

कुछ अधिकारियों ने अपनी टेबिल-कुर्सियाँ मिल के बाहर ही लगा लीं। पास ही सत्यदेव परिव्राजक का गीता पर प्रवचन हो रहा है—''मजदूर बहनो और भाइयो! महाभारत के आरम्भ में ही अर्जुन ने अपना गांडीव फेंक दिया—नहीं कर सकते ऐसा युद्ध! उसे मोह ने घेर लिया था, वह निराश और हताश हो गया था। ये सब तो हमारे कुटुम्बी, सगे-सम्बन्धी, भाई, बेटे, गुरु और रात-दिन के साथी हैं। इन्हें कैसे मारें? पाप लगेगा। कृष्ण ने कहा—तुम इन्हें क्या मारोगे, वे जीवित भी हैं क्या? देखो मेरे मुँह में, खोल दिया उन्होंने अपना मुँह। बाप रे! वहाँ तो पूरा ब्रह्माण्ड चक्कर काट रहा था। नांदगाँव जैसी करोड़ों बी० एन० सी० मिलें और वहाँ हो रहे थे ऐसे ही आन्दोलन! सबके सब मरे हुए, जीवन तो निमित्त है। एक दिन सभी को मरना है, कोई भी क्यों न हो वह? चाहे पिता हो, माता हो, गुरु हो, भाई हो, पुत्र हो, पत्नी हो, शत्रु हो, मित्र हो! ये तो कुछ क्षणों के सम्बन्ध हैं। आत्मा इन सबसे मुक्त है, परे है, वह अजर-अमर है, उसकी मृत्यु नहीं होती। मूल बात है—नियत काम करना, निष्काम भाव से काम करना, अधिकारों के लिए महाभारत लड़ना।

एक ओर पिकेटिंग चलती और दूसरी ओर गीता का पाठ। मजदूर भाई-बहन भी सुन रहे हैं और अधिकारी भी। वहीं पास खड़े हुए सिपाही भी अपनी लाठियाँ जमीन पर पटक रहे हैं। स्वामी सत्यदेव कह रहें हैं—''यही है कुरुक्षेत्र। यहीं कहीं आपको दुर्योधन और दुःशासन मिल जायेंगे, भीष्म और द्रोण भी, कर्ण और शकुनि भी यहीं खड़े हुए हैं। इन्हें ठीक ढङ्ग से पहिचानो। इस युग में इन्होंने अपने वेश बदल लिए हैं। इनका विनाश करो; ये ही महाभारत के कारण हैं।''

हड़ताल लम्बी होती जा रही थी। तभी मिल के अधिकारियों ने कुंजबिहारी चौबे को भेजा था वर्धा। "पूछकर आओ अपने महात्मा गांधी से कि इस प्रकार धरना देना सत्याग्रह की सीमा में आता है या नहीं!" गांधी जी नांदगांव की श्रमिक क्रान्ति से अच्छी तरह परिचित थे। उन्हें मजदूरों की एक-एक बात का पता था। उन्होंने कुंजबिहारी को उत्तर दिया—"सत्याग्रह और सविनय आन्दोलन, इन दोनों की मूल आधारशिलायें हैं प्रेम और अहिंसा। अगर इनके द्वारा हिंसा और द्वेष का वातावरण फैलता है, मजदूर उत्तेजित होते हैं, वे शक्तिपूर्वक पिकेटिंग करते हैं तो यह हिंसा हुई। सत्याग्रही को हिंसा फैलाने वाली कोई हरकत नहीं करना है। अगर कोई एक गाल पर थप्पड़ मारता है तो शान्त भाव से उसके सामने दूसरा गाल कर देना है। वस्तुतः अहिंसा का रास्ता एकतरफा है—मात्र असहयोग करना। इसके द्वारा किसी को बाधित नहीं किया जा सकता।

पर कुंजबिहारी नांदगांव लौटे ही नहीं। वे नेता जी से मिले थे और उनके समक्ष अपनी समस्या रखी थी। उन्होंने उत्तर दिया—"कामरेड, गांधीवाद युवा-शक्ति के लिए नहीं है। वह बूढ़ों का, समझौतावादियों का दिवा-स्वप्न है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि आजादी कभी मांगने से नहीं मिलती, छीनी जाती है। अन्याय प्रार्थनाओं से नहीं रुकते, उन्हें शक्ति के बल पर रोका जाता है। सेर का उत्तर सवा सेर द्वारा दिया जाये, बिल्ली की म्याऊँ से नहीं। तुम जाओ और युवा कामरेड साथियों से कहो—प्यार और युद्ध में सब जायज होता है, सब कुछ"

कुंजीलाल ने तब अपने मन में सोचा था, आज सारा देश कन्फ्यूज्ड है। दो अतियों पर, सरिता के दो किनारों पर चलने वाला। और ये अंग्रेज इन दोनों का लाभ उठा रहे थे। स्वतन्त्रता का सूरज अभी बहुत दूर है पर उसे कौन रोक सकता है उगने से? इस देश में सूरज उगाने वाले बहुत लोग हैं। मेरे जीवन का लक्ष्य ही दूसरा है—मुझे तो अन्तः चेतना का सूर्य उगाना है, अखण्ड चेतना का महासूर्य—जो हर

शरीर के भीतर स्थित है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस और महर्षि अर-विन्द की तरह। मुझे शरीर के स्तर से ऊपर उठना है, इसके सुख-दुख से बहुत ऊपर! उन्होंने तब अपने शरीर को १६ स्थानों से रेजर से काटा था और हँसते हुए अपना रक्त काली माँ के चरणों मे अर्पित किया था। लोग उन्हें अस्पताल ले गये। उन्हें बिना बेहोश किए सोलह स्थानों पर टाँके लगाये गये थे, पर आह तक नहीं की थी कुंजबिहारी ने। धीरे धीरे वे शारीरिक चेतना छोड़ते गये, संसार में रहकर भी उससे मुक्त हो गये। काली माँ के अवतार मेहर बाबा के परम भक्त बन गये। उन्हें विश्वास हो गया कि आत्मा की तरह यह शरीर भी अनश्वर है और यह मर भी जाए तो मेहर बाबा स्वयं आकर इसे जिन्दा कर देगे। उन्होने एक दिन एकान्त में प्रयोग भी कर डाला। शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़का और माचिस से आग लगा ली। कमरे से आग की भयानक लपटें, धुआँ, पर चीखने-चिल्लाने की कोई आवाज तक नहीं लोग जब तक दरवाजे तोड़कर भीतर प्रविष्ट हुए तब तक उन्नीस वर्षीय कुंजबिहारी का शरीर अमर हो चुका था। उन्हीं के क्रांतिकारी गीत लोग दुहरा रहे हैं। "हमला नचाय ते बेंदरा बरोबर, बन गए तेहर मदारी जी। चीथ-चीथ के हमर चेथी के माँस ला, अपन बर तेहर टेकाए बंगला।" पिकेटिंग अभी चल रही है। सुमित्रा अभी भी गा रही है, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक अभी भी गीता का उपदेश सुना रहे हैं...."

दो-चार दिनों के बाद ही नांदगाँव मिल-मजदूरों के आन्दोलन पर गांधी जी की संक्षिप्त प्रतिक्रिया समाचार-पत्रों मे प्रकाशित हुई। "किसी भी प्रकार की हिंसा को भड़काने वाला सत्याग्रह या धरना सविनय अवज्ञा आन्दोलन के नाम से नहीं पुकारा जा सकता। सत्याग्रह तो जीवन को दिव्य शक्तियों पर आधारित होता है। सत्य दूसरे शब्दों में ईश्वर का प्रतीक है। अतः सत्य के प्रति आग्रह का तात्पर्य है अत्यन्त पवित्र साधनों द्वारा ईश्वर जैसी मूल्यवान वस्तु प्राप्त करना। उसमें

हिंसा, द्वेष, अमर्ष, क्रोध, प्रतिशोध आदि के लिए कोई स्थान नहीं है। सत्याग्रह में तो अहिंसा का अखण्ड साम्राज्य रहता है।"

इस टिप्पणी को पढ़कर दीवान और मिल मैनेजर ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि पिकेटिंग करने वाली महिलाओं को रौंदते हुए मिल में प्रवेश करो। नरबदिया, सुमित्रा, दुखिया आदि ने हाथ में लाल झंडा लेकर प्रतिरोध किया तो पुलिस के सिपाहियों ने इनकी साड़ियाँ छीन ली और भयंकर लाठी चार्ज प्रारम्भ कर दिया। अनेक महिलाएँ पिटते-पिटते बेहोश हो गई, सैकड़ों के सिर फूटे, हाथ टूटे, बेइज्जती की गई, सामूहिक बालात्कार किये गये। चार सौ मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया गया तथा मिल का घाटा पूरा करने के लिए सारे मजदूरों का दस प्रतिशत वेतन कम कर दिया गया। और १६ नवम्बर १६३६ को दीवान मैक गाबिन ने ठाकुर प्यारेलाल को रायपुर में नोटिस भेजा—"आप नांदगाँव स्टेट में प्रवेश नही कर सकते।"

नोटिस की चिन्ता न कर ठाकुर प्यारेलाल तत्काल नांदगाँव आये और उन्होंने स्टेशन के वेटिंग रूम में अपना कार्यालय खोल लिया। वहाँ सारे मजदूर एकत्र होते, मंत्रणा होती और भविष्य की रूपरेखा तय होती। प्यारेलाल के संभावित कार्यक्रमों से मजदूरों का ध्यान दूसरी ओर आकृष्ट करने के लिए दीवान तथा मैनेजर ने एक नयी चाल चली। उन्होंने एक सूचना छपवाई और उसका काफी प्रचार-प्रसार भी कराया कि डा० अम्बेडकर के आह्वान पर हजारों सतनामी तथा अन्य अछूत कहे जाने वाले लोग बौद्ध धर्म में दीक्षित हो रहे हैं। बौद्ध धर्म जन्म-जन्मांतर से अछूत कहे जाने वाले लोगों को नया जीवन, नया सम्मान और समाज में ऊँचा पद प्रदान करता है। हिन्दू धर्म भ्रष्ट है, जो अपने ही भाइयों के प्रति अन्याय करता है। मजदूर भाइयो, डा० अम्बेडकर की छत्रछाया में बौद्ध धर्म ग्रहण करो और अपने जीवन का कायाकल्प करो।

प्यारेलाल इस प्रचार-प्रसार के षड्यंत्र को समझ गये। उन्होंने भी एक पर्चा छपवाया—"भाइयो, विशेषकर महार भाइयो और बहनो!

तुम सब मिल के अधिकारियों के बहकावे में आकर अपना बहुत बड़ा अनर्थ कर रहे हो। यह समय तुम्हारे जीवन और मरण से सम्बन्धित है। अगर इस समय गलती की तो जिन्दगी भर पश्चाताप करना पड़ेगा। यह समय एक साथ मिलकर दस प्रतिशत वेतन में हुई कटौती का विरोध करना है। धर्म-परिवर्तन बहुत ही गौण बात है। अंग्रेज जान-बूझकर इस अनर्थकारी मामले में तुम्हें उलझाकर तुम्हारी शक्ति को क्षीण करना चाहते हैं।"

उन्होंने एक पत्र मैक गाबिन को भी लिखा—"एक युग हो गया राजनांदगांव छोड़े हुए, लेकिन इस अवधि के बाद भी आप लोग रट लगाये हुए हैं कि स्टेट में मत आओ। आपका यह ख्याल गलत है कि अगर मैं राजनांदगांव में नहीं आया तो मिल में हड़ताल नहीं होगी। मेरे भाषणों से हड़ताल नहीं हुई है, हड़ताल का मूल कारण आप स्वयं हैं। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं हर परिस्थिति का अपने हित में उपयोग करना अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे आने या न आने से हड़ताल पर कोई असर नहीं पड़ेगा। आप अपनी पूरी तैयारी करें। अब अगली हड़ताल फरवरी में होगी। और जिस क्षण राजनांदगांव को मेरी जरूरत होगी मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा—"दि मोमेंट, दि नीड इज देयर, आई विल बी देयर, आर्डर आर नो आर्डर।"

घोषणा के अनुसार फरवरी १९३७ में मजदूरों की जंगी हड़ताल प्रारम्भ हो गई। इस बार मिल मालिकों ने ठाकुर प्यारेलाल से इस संदर्भ में बात करना तक अस्वीकार कर दिया। प्यारेलाल स्टेशन के प्रतीक्षालय से हड़ताल का संचालन कर रहे थे। हड़ताल लम्बी खिंचती चली गई। मिल मालिकों ने घुटने टेक देने में ही अपनी बुद्धिमत्ता समझी। पर अब प्यारेलाल ने जिद पकड़ ली—"मैं उनसे बात करने के लिए तैयार नहीं।" मिल के अंग्रेज मैनेजर ने प्यारेलाल पर रायपुर के कमिश्नर द्वारा दबाव डलवाया। पर प्यारेलाल ने कहा—"असंभव! ठाकुर कभी दो प्रकार की बातें नहीं बोलता।" मिल के अधिकारियों ने अब आतंक

और दमन का रास्ता अपनाया पर मजदूर फिर भी न टूटे, न झुके। अतः उन्होंने प्यारेलाल के पास सूचना भिजवाई, अगर आप हमसे बात नहीं करना चाहते तो कोई बात नहीं, पर आप किसी व्यक्ति का नाम सुझायें जिससे समझौते की बातें की जा सकें। तब ठाकुर साहब ने दो नाम सुझाये थे—श्री कलप्पा और सखाराम रामचन्द्र रुईकर का। कल्पना तो किसी कारण राजनांद गांव नहीं जा सके पर मिल के अधिकारियों का संदेश पाकर रुईकर तत्काल पहुँच गये और उन्होंने ठाकुर साहब की शर्तों के आधार पर मजदूरों तथा अधिकारियों का समझौता कराया।

प्यारेलाल जी द्वारा संचालित इस मजदूर आन्दोलन ने अखिल भारतीय कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया था। गांधी जी ने इसका सारा कच्चा चिट्ठा अपने पास बुलवाया था और यह भारत के इतिहास में पहली घटना थी जब अंग्रेज पोलीटिकल एजेंट, मिल अधिकारियों तथा श्रमिक नेताओं के पत्र-व्यवहार सम्बन्धी सारे कागजात गांधी जी ने खुद देखे थे और उनके आधार पर अपनी राय व्यक्त की थी।

इसी के पश्चात् नांदगांव के मिल्स मजदूरों के लिये जेम्सन रिपोर्ट घोषित की गई। इसमें मजदूरों के वैधानिक अधिकारों की व्यवस्था की गई थी। पर मिल मैनेजर ने उसे रद्दी टोकरी में फेंक दिया। इन वैधानिक अधिकारों की मांग करने वाले चार सौ मजदूर नेताओं को नौकरी से निकाल बाहर किया गया। छंटनी के विरोध में रुईकर के नेतृत्व में हड़ताल प्रारंभ हो गई। मजदूरों के लिए नांदगांव के घर-घर से चावल, दाल, पैसे, वस्त्र और बर्तन एकत्र किए जाने लगे। मजदूरों में अदम्य उत्साह दिखाई दे रहा था। इसी समय महिला मजदूरों ने मिल के प्रथम द्वार पर धरना दिया और परिव्राजक सत्यदेव ने गीता पर अपने प्रवचन किये। महिलाओं पर किये जाने वाले अधिकारियों के अत्याचारों के कारण मजदूर हिंसक हो उठे थे तो गांधीजी ने इस आन्दोलन को तत्काल वापस लेने की मांग की थी। ११ माह तक झगड़े

का उत्पादन पूरी तरह बन्द रहा। अधिकारियों ने ६०० मजदूरों की और छंटनी कर दी। मजदूरों को चार लाख रुपये का नुकसान हुआ किन्तु फिर भी कोई समझौता नहीं हो सका। रुईकर परेशान थे। वे एक बार फिर दौड़े थे रायपुर ठाकुर प्यारेलाल जी के पास और तब उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब ठाकुर साहब द्वारा रखी गई सारी शर्तों को मिल के अधिकारियों ने मान लिया। हड़ताल सम्मानपूर्वक समाप्त हो गई। छटनी किए गए सारे श्रमिक काम पर वापस ले लिए गये। तत्कालीन राजा सर्वेश्वरदास ने रियासत में प्रवेश न करने से सम्बधित ठाकुर साहब पर लगाये गये प्रतिबंध को भी समाप्त कर दिया।

□

अट्ठारह

□

उस दिन अंजोरा (दुर्ग) में काफी चहल-पहल था राष्ट्रीय स्तर के कई कांग्रेसी नेता उपस्थित थे। छतीसगढ़ की पूर्वी रियासतों के अनेक कांग्रेस-कार्यकर्त्ता भी वहाँ उपस्थित थे उस दिन यहाँ नांदगांव स्टेट कांग्रेस का उद्घाटन होने वाला था। ठाकुर प्यारेलाल प्रमुख अतिथि थे। किन्तु वे अपरिहार्य कारणों से उपस्थित नही हो सके। उन्होंने भेजी थी अपनी शुभकामनायें—"भाइयो और बहनो ! आप पूछ सकते हैं कि नांदगांव स्टेट कांग्रेस का उद्घाटन यहाँ क्यों हो रहा है ? नांदगांव में क्यों नहीं ? कारण बड़ा स्पष्ट है। विभिन्न रियासतों ने अपने यहाँ स्वतंत्रता-संघर्ष संबंधी कार्यक्रमों पर रोक लगा दी है। राजाओं को अंग्रेज पोलीटिकल एजेंटों के कड़े आदेश हैं, रियासत के भीतर स्वतंत्रता की माँग नहीं उठनी चाहिए। दूसरी ओर गांधी जी तथा सुभाषचन्द्र बोस के यहाँ से बराबर संदेश आ रहे हैं कि अब समय आ गया है जब रियासतों के भीतर कांग्रेस संगठन स्थापित किया जावे और जनता को स्वतंत्रता के लिए जागृत तथा प्रशिक्षित किया जावे। कांग्रेस के कार्यालय

के लिए अंजोरा एक अत्यन्त सुरक्षित जगह है। यह नांदगांव रियासत की सीमा पर स्थित है। उसके निकट भी है और रियासती प्रभावों से मुक्त भी। यहां से दुर्ग भी निकट है। इन स्थितियों में इस जगह इन दोनो स्थानो की गतिविधियों का नियंत्रण अच्छी तरह हो सकता है। यह राष्ट्रीय मार्ग पर भी है। अतः आवागमन की यहां सुविधायें हैं। नांदगांव देश का जलता हुआ एक ज्वालामुखी है। यहां अपमान, शोषण, भूख और आक्रोश की अग्नि में झुलसते हुए हजारों श्रमिक भाई हैं, जो अपने अधिकारो के लिए निरन्तर संघर्षशील है। उनका संघर्ष केवल अपने लिए नही वरन् देश की स्वतन्त्रता से भी जुड़ा हुआ है। यहां रहकर हम उन भाइयों का भी मार्ग-दर्शन कर सकते है।

शहरो में अंग्रेजों का अब इतना अधिक आतंक बढ़ता जा रहा है कि वहां खुलेआम स्वतन्त्रता की बात भी नहीं की जा सकती, दूसरी ओर गांव मे बसा हुआ हमारा देश उन सारी बातों तथा आन्दोलनों से बे-खबर है जो नित्य प्रति शहरों में घटित हो रही है। अतः आज युग की मांग है कि हमे देश के ९८ प्रतिशत लोगो के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अब शहरों से गांवों की ओर ही जाना पड़ेगा। इस दृष्टि से भी कांग्रेस के कार्यालय के लिए इस अंजोरा गांव का चुनाव नही किया गया है।

आपको मालूम ही होगा कि रियासती अधिकारियों ने अंग्रेज एजेंटों के कहने पर गांव की जनता के लिए जंगल से निस्तार पूरी तरह बन्द कर दिये हैं। वह वहां के जलाने की लकड़ी भी नही काट सकती। अतः अब हमें गांव-गांव में आकर जंगल सत्याग्रह आयोजित करने हैं। ये कार्य केवल नांदगांव में नही, यहां की सभी रियासतों के गावों में आयोजित होने चाहिये। गांव अब आन्दोलनों के लिए सबसे अधिक निरापद स्थान है। वहां पुलिस मुश्किल से पहुंच पाती है और समाचार [illegible] तक पहुंचती भी है [illegible] तक हमारे सत्याग्रही चार अन्य गावों में इस तरह के आन्दोलन कर सकते हैं।

इस अवसर पर मैं आप लोगों से एक और महत्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। जब तक उत्पादन, वितरण एवं लेन-देन के साधनों से व्यक्तिगत स्वामित्व समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक व्यक्ति को उसकी वास्तविक आवश्यकतानुसार जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्राप्त नहीं होती तब तक सामान्य जनता के लिए स्वराज्य नहीं आ सकता। यदि हम सचमुच ९८ प्रतिशत जनता को स्वराज्य लाना चाहते हैं तो हमें समाजवादी जीवन और प्रशासन पद्धतियां कबूल करनी होंगी। आज स्थिति कुछ ऐसी है कि हमें गांधी भी चाहिये और मार्क्स भी। हम जानते हैं कि दोनों की विचारधाराओं और संसाधनों में महान अन्तर है पर दोनों के लक्ष्य एक हैं—समाजवादी समाज की संरचना। मार्क्स मानवीय समाज की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टि से व्याख्या करता है। वह वर्गसंघर्ष और व्यक्तिगत स्वामित्व का विरोधी है, पर गांधी जी समन्वय और समदृष्टिवादी हैं। आज गांधी जी हमारी स्वतन्त्रता के प्रथम सोपान हैं। और मार्क्स दूसरे। इसका स्पष्ट है—हमारी सारी शक्ति और ध्यान आज स्वतन्त्रता संग्राम में लगा हुआ है। अतः इस समय हम मार्क्स के वर्ग संघर्ष का खतरा नहीं उठा सकते। इस स्वतन्त्रता-संग्राम में हमें अपने देश के पूंजीपतियों, सामंतों और राजाओं का सहयोग चाहिए तथा दूसरी ओर किसान, मजदूरों का भी। "आज के इस स्टेट कांग्रेस अधिवेशन की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ।"

तालियों से बहुत देर तक सभा-स्थल गूँजता रहा था। उसी दिन सर्वसम्मति से श्रीमती इंदिरा बईकर को स्टेट कांग्रेस का अध्यक्ष मनोनीत किया गया, जिससे देश की महिलायें भी इस दिशा में सोचें तथा अग्रसर हों। ठाकुर लोटन सिंह, एकनाथ मारुति राव, कन्हैयालाल अग्रवाल कस्तूर चन्द जैन, द्वारका, छोटेलाल, बिसेसर आदि स्टेट कांग्रेस की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य मनोनीत किये गये।

अधिवेशन के कुछ सप्ताह बाद रात्रि में लालटेन के प्रकाश में कन्हैयालाल हाथ से चलने वाले प्रेस के द्वारा रोलर में स्याही लगाकर

हैंडबिल छाप रहे थे। १५-२० हैंडबिलों की छपाई में ही उनके माथे पर पसीने की बूँदें झलक उठीं। उन्हें पोंछते हुए उन्होंने अपने पास बैठे पारख से कहा—

"देख लेना इस बार का हैंडबिल समाज में आग लगा देना।"

"केवल आग ?"

"तो तुम क्या चाहते हो, एक हैंडबिल के द्वारा अंग्रेजों की चिन्ता भी जलने लगे। वह भी जलेगी भाई। पर मुझे अभी एक हजार हैंडबिल निकाल तो लेने दो।"

"तुम रोज तो निकालते हो एक हजार हैंडबिल, पर मैंने आज तक कहीं लगी हुई आग नहीं देखी।"

"यह क्रान्ति की आग है पारख ! एकाएक नहीं दिखाई देती। इसका काम है—हृदय में एक चिंगारी सुलगा देना, अंग्रेजों के अत्याचारों से जनता को परिचित करा देना, किसानों-मजदूरों को यह बता देना कि वे गुलाम पैदा नहीं हुए, गुलाम सामंतों, जमींदारों तथा अंग्रेजों के द्वारा बनाये गये हैं।

"जानता हूँ—स्वतन्त्रता की प्यास जगाना ताकि उसे बुझाने के लिए जनता फिर स्वयं कुआँ खोदने के लिए तत्पर हो सके।"

"तुम ये सारी बातें बहुत अच्छी तरह जानते हो तो फिर इस बार डिक्टेटर क्यों नहीं बन जाते ?"

"अरे कन्हैया भाई ! पहले दूसरों को अवसर दो। मैं···मैं तो बनूँगा ही। देखो जल्दी हाथ चलाओ बानर-सेना अर्थात् वालंटियर आने ही वाले हैं। सुना है बानर-सेना के मुखिया रतनलाल अग्रवाल को पुलिस ने हैंडबिल बाँटते हुए पकड़ लिया, साथ में दस-पन्द्रह बच्चे भी पकड़े गये। कबर्रा के घने जंगलों में ले जाकर उन्हें रात के अन्धेरे में ही छोड़ दिया गया।'

"यह तो रोज की बात है पारख ! पर इस बार डिक्टेटर तो तुम्हें

बनना ही होगा। देखो एकनाथ गये, कस्तूर चन्द्र गये, और अब तीसरा नम्बर तुम्हारा है।"

कुछ दिनों बाद रोली, अक्षत, चन्दन लगाकर-फूल मालायें पहनाकर पारख जी को डिक्टेटर बना दिया गया। डिक्टेटर अर्थात् उस दिन जंगल-सत्याग्रह का नेता। उसके नेतृत्व में चार-छह गाँव के सत्याग्रही होते जो जंगल मे जाकर लड़की काटते और सामूहिक रूप से अपनी गिरफ्तारी देकर लोगों का मनोबल बढ़ाते। डिक्टेटर की जय-जयकार के नारे गाँव-गाँव में गूँजते और फिर हैंडबिल में छपता—जंगल सत्याग्रह में श्री····गिरफ्तार।

उस दिन बाँदरा टोला में जंगल सत्याग्रह होने वाला था। हैंडबिल पहले से ही छपकर वितरित हो गये थे। लारियों में भरकर ५० फिरंगी भक्त पुलिस जवान तहसीलदार सुखदेव देवांगन के नेतृत्व में घटना स्थल पर पहुँच गये थे। उधर गाँव की अपार जनता बंदे मातरम् के नारे लगाती हुई आई। भीड़ के आगे केसरिया बाना पहने सत्याग्राही चल रहे थे। उनकी जय-जयकार हो रही थी। जंगल की सीमा में जैसे ही सत्याग्राहियों ने प्रवेश किया, पुलिस ने ललकारा—"खबरदार जो आगे बढ़े।"

सत्याग्रही एक क्षण ठिठके। तभी पीछे से रामाधीन गोंड़ ने तेज स्वर मे कहा—"रुक कैसे गये! आगे बढ़ो" रामाधीन २७ वर्ष का युवक, चेहरे पर गजब का तेज, उसके हाथ में लकलक करती एक कुल्हाड़ी थी। पेड़ काटने के लिए वह वार करने ही वाला था था कि पुलिस की सनसनाती हुई एक गोली आई और उसकी छाती के पार निकल गई। फिर तो चारों ओर भगदड़ मच गई। पुलिस ने भागती जनता पर पाशविक लाठी चार्ज किया। कुछ ही क्षणों में बंदे मातरम् के नारों से गूँजता हुआ वह जंगल खून और कराहों से भर गया। शहीद रामाधीन का शव और घायलों को वहीं उसी हालत में छोड़कर पुलिस शहर लौट गई। बाद में साहस कर गाँव वालों ने घायलों को अस्पताल पहुँचाया। जंगल सत्याग्रह में देश में प्रथम शहीद होने वाले रामाधीन

का नाम और चित्र समाचार पत्रों में कई दिनों तक छपते रहे। और पुलिस की बर्बरता की निन्दा की जाती रही। नौगांव में इसके विरोध में जुलूस भी निकाले गये। लाउडस्पीकर द्वारा सारे शहर तथा गाँव-गाँव में घोषणा की गई, हैंडबिल बनाकर भी वितरित किये गये कि रामाधीन को श्रद्धांजलि देने तथा पुलिस कार्यवाही का विरोध करने के लिए देश के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री अमरसिंह सहगल का मंगलवार की शाम को ठीक सात बजे भाषण होगा। किन्तु इस जंगी आम सभा पर पुलिस अधीक्षक ने बैन लगा दिया तथा सुरक्षा की दृष्टि से सैकड़ों सिपाहियों को गोल बाजार में खड़ा कर दिया। पुलिस वाले लाठियाँ ऐंठते सबेरे से ही खड़े हो गये थे। दूसरी ओर शाम को कन्हैयालाल लौटन सिंह से कह रहे थे—

"ठाकुर!" यह तो बड़ी बदनामी की बात हुई। आम सभा की घोषणा की जा चुकी है और अब अगर सभा न हुई तो बड़ी बेइज्जती होगी। लोग कहेंगे कि ये सत्याग्रही पुलिस की लाठियों से डर गये। मुँह छिपाकर भाग गये। जेल में बंद हमारे साथी गालियाँ देंगे। अब खुद की बारी आई तो आम सभा बुलाकर भी घर में चूड़ियाँ पहनकर बैठ गये। लौटन भाई, कुछ उपाय सोचो न!"

"घबड़ाते क्यों हो कन्हैयालाल! अपनी सभा होगी, और वहीं होगी। ठीक समय पर भाषण भी होगा। आज तुम हमारा करतब देखना।"

ठीक समय पर लौटनसिंह सभा स्थल पर पहुँचे। उन्हें देखते ही सिपाहियों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और जमीन पर लाठियाँ पटकने लगे। सैकड़ों की संख्या में तमाशबीन भी इकट्ठे हो गये। उन्होंने लाठियों की आवाज से अनुमान लगाया कि शायद लाठी चार्ज हो गया है, इससे चारों ओर भगदड़ मच गई। इधर लौटन सिंह ने चिल्लाकर कहना आरंभ किया—भाइयो! मैं आदेश देता हूँ, आप लोग शान्तिपूर्वक अपने घर जायें, हमारी सभा खतम हो चुकी है। आप लोग घर जायें। मैं आप सबको यह सूचना देना चाहता हूँ कि आज की इस

जंगी सभा को संबोधित करने के लिए अमरसिंह सहगल आने वाले थे, किन्तु उनका स्वास्थ्य सहसा खराब हो गया है। वे आपके बीच उपस्थित होने में असमर्थ हैं। हमें जो कहना था, कह चुके हैं। आप शान्तिपूर्वक घर जायँ।"

सभा हुई ही नहीं, पर उसकी समाप्ति की घोषणा करने वाले लौटन सिंह को पुलिस ने बंदी बना लिया। पुलिस अधीक्षक ने सर्किल आफिसर को बुलाकर डाँट लगाई—"तुम्हारे रहते हुए गोल चौक में सभा क्यों हुई ?"

"सभा हुई ? कहाँ सभा हुई ? मैं तो सबेरे से ही वहीं खड़ा था, एक मिनट के लिए नहीं हटा !"

"तो फिर लौटन सिंह का भाषण वहाँ कैसे हुआ ? भाषण सभा में दिया जाता है या घर में ?"

"उसने तो यों ही झूठ-मूठ सभा-समाप्ति की घोषणा की थी। इस अपराध में उसे बंदी भी बना लिया गया है।"

"मैं एक भी बात नहीं सुनना चाहता। तुम सबकी आँखों में धूल झोंककर उसने जनता को संबोधित किया। जनता से शान्तिपूर्वक घर लौट जाने की अपील की। जब कोई एक घंटा भाषण देता है तभी भाषण कहलाता है क्या ? बोलो, इस संबंध में तुम क्या कहना चाहते हो ?"

"सोरी सर !"

"सोरी कहने से प्रशासन नहीं चलता। तुम्हें मालूम था कि अमर सिंह को इस प्रदेश की सीमा के भीतर भी नहीं आने दिया गया है फिर भी उसने उनकी अस्वस्थता की बात कही। यह सत्याग्रहियों की एक चाल है। वह एक अदना-सा लड़का तुम सबको मूर्ख बनाकर निर्धारित स्थान और समय पर आम सभा कर गया। अब उस पर जेल में कड़ी निगरानी रखी जाये और कुछ भयंकर किस्म के आरोप लगाकर उसे कड़ी से कड़ी सजा दिलवाई जाये।"

"यस सर !" सर्किल आफिसर ने कहा था।

जेल के स्वीपर द्वारा लौटनसिंह ने कन्हैयालाल को संदेश भिजवाया "कन्हैया ! तुम्हारा चन्द्रभान उर्फ बब्बी क्षमा माँगने के लिए तैयार हो गया है। तुम जल्दी आओ वरना उसे देखकर दूसरे सत्याग्रही भी ऐसा कर सकते हैं।"

इस समाचार के दूसरे ही दिन कन्हैयालाल ने भी अपनी गिरफ्तारी दी और जेल के भीतर जाकर बब्बी को फटकारा—"तुम्हारा बचकानापन अभी गया नहीं चन्द्रभान ! क्या केवल हैंडबिल में नाम छपाने के लिए सत्याग्रही बने थे। देश के लाखों लोग जेलों में भरे हुए हैं। तुम क्यों डर रहे हो ! जेल से छूटकर घर में क्या अब तुम्हें पुलिस वाले छोड़ देंगे ? कल ही तुम्हें फिर किसी दूसरे जघन्य अपराध में फँसाकर वे यहाँ भेज देंगे। इससे बेहतर है—यहीं रहो, तूबर की दाल और कंकड़ मिला भात खाने से स्वास्थ्य सुधारता है, पाचन-शक्ति बढ़ती है, समझे। बाहर तुम्हें ये चीजें भी नहीं मिलेंगी।"

चन्द्रभान ने तब अपना क्षमा-याचना पत्र फाड़कर फेंक दिया।

नांदगांव जंगल-सत्याग्रह की खबर भी गाँधी जी के पास पहुँची थी। उन्होंने अपने पास छईकर को बुलाकर पूछा था—"छईकर ! तुम्हारे सत्याग्राहियों में शिक्षित कितने हैं ? अगर लोग शिक्षित नहीं हैं तो तुम्हारा हर आन्दोलन हिंसक हो जायेगा। इससे अच्छा है, अभी सत्याग्रह बन्द करो। क्योंकि लोगों से जबरन आन्दोलन नहीं कराया जा सकता। आन्दोलन की एक भूख होती है जो भीतर से, सहज ढंग से उत्पन्न होनी चाहिए। अतः जरूरी यह है कि पहले तुम जनता को जाग्रत करो, राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार करो। उत्तरदायी शासन की माँग करो। राजाओं तथा अंग्रेज प्रशासन से रियायतें माँगों, इस तरह के खून-खच्चर की स्थिति नहीं आनी चाहिए।"

दूसरे ही दिन वर्धा से छईकर नांदगांव लौट आए थे। कुछ ही दिनों में गाँधी जी ने अपने आदेश से जंगल-सत्याग्रह वापस ले लिया। अतः सभी बन्दी सत्याग्रही भी छोड़ दिये गये।

□

उन्नीस

□

जंगल सत्याग्रह में रामाधीन के शहीद होने की खबर से उद्वेलित रायपुर से नांदगांव जाने के लिए जैसे ही ठाकुर प्यारेलाल घर से निकले, गोमती ने उनके हाथ में उस दिन का डाक का एक भारी पुलिंदा थमा दिया। ठाकुर साहब ने उसे अपने खादी के थैले में डाला और पैदल ही स्टेशन की ओर चल पड़े। आज सबेरे ही वे लगभग एक सप्ताह के बाद बस्तर के गांव का सघन दौरा करके वापस आये थे। रास्ते में, स्टेशन पर, गाड़ी में या फिर कहीं भी उन्हें जो थोड़ा-बहुत समय मिलता, उसका उपयोग वे बाहर से आये पत्रों को पढ़ने तथा उनका उत्तर लिखने में किया करते थे।

सदा की तरह उस दिन भी देश के कोने-कोने से पत्र आये थे। कुछ पत्र 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का विस्तार करने तथा उसमें तेजी लाने से संबंधित थे और कुछ कांग्रेस के संगठन और नेतृत्व से संबंधित। गाड़ी के डिब्बे में बैठकर ठाकुर साहब एक-एक करके सब पत्रों के उत्तर लिख रहे थे। पत्र लिखने में वे बड़े ही नियमित थे। अगर उन्हें पत्र लिखा गया है तो एक निश्चित अवधि में उसका उत्तर अवश्य प्राप्त हो जाता था। अगर दिन में उन्हें समय नहीं मिल पाता था तो वे रात में देर तक बैठकर पत्रों के उत्तर लिखा करते थे, पर आज का काम वे कल के लिए कभी नहीं छोड़ते थे।

उस समय उनके दो पुत्र भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण जेल में थे। कुछ दिन पूर्व सच्चिदानन्द ने लिखा था कि वे जेल में अस्थमा से मरणासन्न हैं। शंकर तथा उनके कई साथियों ने

उनसे आग्रह किया था कि एक बार जेल में देखने चला आये, पर प्यारेलाल ने एक छोटा-सा उत्तर ही लिखकर भेज दिया था—"होइहै वही जो रामरचि राखा। तुम चिन्ता न करो, सबका रक्षक ईश्वर है।"

आज के ढेर सारे पत्रों के बीच उन्हें एक पत्र अपने बड़े पुत्र रामकृष्ण का भी मिला था। वे रायपुर जेल में थे। उन्हें कई दिनों से घर का समाचार न मिलने के कारण चिन्ता थी। प्यारेलाल ने उन्हें उत्तर लिखा—

प्रिया बाबू !

तुम स्वयं को ईश्वर के निमित्त रूप में समझो। घर विषय में या किसी के विषय में कभी चिन्ता मत करो। हम सबके हृदय में अन्तर्यामी ईश्वर निवास करते हैं। हमारे जीवन के सारे कार्य उन्हीं की प्रेरणा से संचालित हो रहे हैं।

तुम्हें मेरी किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। ईश्वर सदा मेरी सहायक है और रहेंगे। तुम लोगों की अपनी आत्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए गीता के दूसरे अध्याय के उन श्लोकों में रमना चाहिए जिनमें आत्मा की अमरता, बुद्धि-योग भक्ति योग की महत्ता बताई गई है। इससे जो शक्ति मनुष्य में आती है, उसी से सब कामनाओं की पूर्ति और चिन्ताओं का नाश होता है।

हर धर्म की तीन अवस्थायें होती है। (१) तस्यैवाहं (२) त्वेवाहं और (३) सोऽहम्। तस्ये वाहं से सोऽहम् तक पहुँचाना ही धर्मों का प्रयोजन है। यही रास्ता आत्मज्ञान की ओर ले जाता है। इसके बिना शोक और मोह दूर नहीं होता।

मैं नित्य आनन्द हूँ। मेरी चिन्ता बिलकुल मत करो। घर में सब कुशल हैं। मेरा आशीर्वाद और सब का प्रेम लो।

पुनश्च: यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम आजकल धार्मिक और स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकें पढ़ रहे हो, लेकिन पढ़ने के संबंध में मेरी एक निश्चित राय है, उस पर विचार करना। कम पढ़ना, ज्यादा सोचना, बहु

पढ़ने का सबसे उचित तरीका है। पढ़ कर तथा सोचकर उत्तम बातों का अनुष्ठान करना, यह नितान्त आवश्यक बात है। पढ़ने का अर्थ भी यही होना चाहिए।

श्री मशरूवाला और साथियों दूसरे साथियों को मेरा वंदेमातरम्।

प्यारेलाल सिंह

पत्र को पूरा किया ही था कि नाँदगाँव स्टेशन आ गया। समान सहेजकर वह नीचे उतरे। आकस्मिक ढंङ्ग से उन्हें स्टेशन पर देखकर नाँदगाँव की जनता ने चारों ओर से घेर लिया। थोड़े ही देर में उनके आने का समाचार विद्युत गति से चारो ओर फैल गया।

रात्रि में गोल चौक में एक विराट आम सभा का अयोजन किया गया था। इसमें छात्र, मजदूर, किसान, व्यापारी, वकील, शिक्षक—सभी वर्गों के हजारों लोग सम्मिलित हुए थे। प्यारेलाल जी ने अपनी बातों को प्रस्तुत करते हुए कहा—भाइयो और बहनो !

मुझे जितना सुख और संतोष हाथ में झाड़ू लेकर मुहल्ले और गाँव-घरों की सफाई करने में मिलता है, इतना भाषण देने में नहीं। यह युग कुछ करने या फिर मर जाने का है। हमने अभी तक क्रांति और आंदोलनों की अनेक मंजिलें पार कर ली हैं। जिस स्वराज्य के लिए इस देश की नौजवान पीढ़ी ने अंग्रेजों और उनके गुलाम भारतीय अधिकारियों के बेंतों की मार सहन की, उनकी लाठियाँ और गोलियाँ वज्र के समान सुदृढ़ अपनी छाती पर सहीं, जिसके लिए उसे जेलों की भीषणतम यातनाएँ झेलनी पड़ीं, जिसके लिए नौजवानों ने अपने गरम लहू से भारत माता की मिट्टी का बार-बार टीका किया, वह स्वराज्य अब हमसे दो-चार कदम ही दूर रह गया है। आओ, हम सब एक साथ उस परम पवित्र और अखण्ड स्वतन्त्रता के महासूर्य का स्वागत करें। गांधी जी के इस भारत छोड़ो आन्दोलन को सदा-सदा की तरह अपनी सशक्त भुजाओं का सहयोग दें।

यदि हम इस देश की ९८ प्रतिशत जनता के लिए स्वराज्य लाना चाहते हैं तो वह स्वराज्य रामराज्य या समाजवादी पद्धति पर ही आधारित हो सकता है और ऐसा समाजवाद तभी आ सकता है जब हमारे साधन भी शुद्ध और सात्विक हों।

मैं आपके बीच रहूँ या न रहूँ पर क्रांति की यह ज्योति, अंग्रेजी दमन के वात्याचक्र में न बुझे, मेरा यही निवेदन है।

तभी पीछे से आकर कुछ सिपाहियों ने उन्हें बंदी बना लिया। रंग मंच से जाते-जाते उन्होंने कहा—भाइयों और बहिनो ! शान्ति से काम लें। ऐसा कोई काम न करें जिससे हिंसा और दमन का चक्र तेज हो। मैं स्वतन्त्रता के पावन मन्दिर में जा रहा हूँ, मेरी चिंता न करें। फिर उस दिन रंगमंच पर अपने को बंदी बनवाने वालों का तांता लग गया था। एक अजीब जोश था। कार्यकर्ता अपने हाथ स्वयं आगे कर देते—हमें बंदी बना लो। उस दिन नांदगांव में एक सौ लोगों ने स्वयं को बंदी बनवाया था। नांदगांव की जेल पहले से ही भरी हुई थी अतः इन सब लोगों को तीन-चार ट्रकों में भरकर रात के अँधेरे में सघन जंगलों में ले जाकर छोड़ दिया गया था।

□

बीस

□

१४ अगस्त, ४७ की शाम को ही ठाकुर प्यारेलाल नागपुर से नांदगांव आ रहे थे। रेल की तृतीय-श्रेणी के डिब्बे में उनके साथ महन्त लक्ष्मीनारायण दास तथा पं० रविशंकर शुक्ल भी थे। सभी ने उन्हें बताया, स्वतन्त्रता दिवस के दिन आपको रायपुर में ही रहना चाहिए। स्व-तन्त्रता के इस पावन अवसर पर सारा रायपुर नगर आपका स्वागत

करने के लिए आपकी प्रतीक्षा कर रहा है, आप नांदगांव में क्यों उतर रहे हैं ?

"शुक्ल जी ! रायपुर मेरा कर्मक्षेत्र है, पर नांदगांव तो मातृभूमि है। मेरी दृष्टि से स्वतन्त्रता के अवसर पर हर व्यक्ति को अपनी मातृ-भूमि में ही होना चाहिए। मैं उस मिट्टी को प्रणाम करना चाहता हूँ जहाँ इस अंचल में सबसे पहले क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई। उस रज को माथे पर लगाना चाहता हूँ, जिसकी प्रभुता से आज यह दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।"

"ठाकुर साहब ! यह सारा देश ही आपकी मातृभूमि है। रायपुर में आकर बस जाने के कारण अब आपके कारण वहाँ की भूमि भी क्रांति की आग में पावन हो चुकी है। १९३३ से आप महाकौशल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री हैं। रायपुर नगर के विकास के हर चरण में आपके श्रम की बूँदे और सांसों को गंध समाहित है। नांदगांव पर आपका अधिकार है और रायपुर का आप पर। किसे प्राथमिकता देंगे आप।

"शुक्ल जी ! व्यक्ति को माता का स्नेह और पिता का दुलार सैकड़ों लोगों से प्राप्त हो सकता है। भाई से भी अधिक आत्मीयता हजारों मित्रों से मिल सकती है, पर फिर भी माता-पिता और भाई नहीं बदले जा सकते।

वस्तुतः स्वतन्त्रता का आने वाला महान दिवस मात्र श्रद्धा व्यक्त करने का नहीं वरन् और अधिक उत्साह और वेग से आगे बढ़ने का दिवस है। अभी तक हम लोग ऊँची-नीची घाटियों, खाई खंदकों में चढ़ते-उतरते रहे, पर आगे का रास्ता हमारा अपना रास्ता है, इसके निर्माण के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होंगे। शुक्ल जी ! अभी तक हम लोगों ने एक मंजिल प्राप्त की है, अब उस स्वतन्त्रता की रक्षा और संवृद्धि के प्रयत्न करने के लिए कल से ही हमें अपनी दूसरी यात्रा प्रारम्भ करनी है। वस्तुतः यह नयी पीढ़ी का कार्य है। इसलिए मैं कहता हूँ कि

स्वतन्त्रता नयी पीढ़ी का पर्व है। मेरी बात मानो और तुम भी मेरे साथ नांदगांव उतर चलो। यह मूलतः नंदिग्राम है—योगेश्वर श्रीकृष्ण के निष्काम कर्मदर्शन का गाँव।

इस समय तक गाड़ी स्टेशन पर रुक गई थी। ठाकुर साहब उतर गये। शुक्ल जी ने कहा—"कल शाम तक आपको रायपुर पहुँचना ही होगा, इस वायदे के साथ आपको यहाँ छोड़ रहा हूँ। वहाँ से आपके लिए कार भिजवाऊँगा! बिना आपके पहुँचे रायपुर में कार्यक्रम शुरू नहीं होगा....."

गाड़ी आगे बढ़ गई। अब महन्त लक्ष्मीनारायण दास शुक्ल जी से कह रहे थे—"मैंने ठाकुर साहब को बहुत निकट से समझने का प्रयत्न किया है। उनके व्यक्तित्व को जितना समझने का प्रयत्न करता हूँ, उतना ही उलझ जाता हूँ इतनी प्रचण्ड ऊर्जा, आखिर इन्हें प्राप्त कहाँ से होती है। जब ये रायपुर नगर पालिका के अध्यक्ष बने तब वहाँ की सड़कें ह्वेल मछली की पसलियों को तरह दिखाई देती थीं। सड़कें थीं या गड्ढे, कहना मुश्किल था। विद्यालयों में या छतें थीं ही नहीं या फिर ऐसी थीं कि उनके नीचे बैठकर पढ़ना मुश्किल था। बरसात में उन छतों से पानी बरसता था, नगरपालिका लाखों के ऋण में आकंठ डूबी थी, आय का कोई साधन नहीं था पर दो वर्षों के भीतर ठाकुर साहब ने सब कुछ व्यवस्थित कर दिया, नये स्कूल भी बनवा दिये, ऋण भी चुका दिया, कर्मचारियों को मँहगाई भत्ता भी दिया। हर मुहल्ले में पीने के पानी की व्यवस्था की और इस नगर को ऊपर उठाने तथा आगे बढ़ाने में वह सब किया जिसकी कल्पना भी एक सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता। फिर भी उस नगर से यह व्यक्ति इतना तटस्थ, इतना अपेक्षा रहित........"

"ठीक कहते हो लक्ष्मी नारायण जी! अगर उनके व्यक्तित्व में इतना जादू न होता तो १६४४ में जब शासन ने तीन-तीन बार नगर पालिका को भंग किया तो इस नगर की जनता तीनों बार उन्हें ही अध्यक्ष

पद पर क्यों चुनती ? इससे स्पष्ट है कि यहाँ के लोगों के हृदय में इनके प्रति कितना अगाध प्रेम और श्रद्धा है !

"और शुक्ल जी ! क्या आने वाले कल के लोग इस बात पर विश्वास कर सकेंगे कि केवल एक व्यक्ति ने छत्तीसगढ़ अंचल में सहकारी आन्दोलनों का महासागर लहरा दिया। ज्येष्ठ की धूप में सूत के लिए व्यापारियों की दूकानों के सामने खड़े बुनकरों की दयनीय स्थिति ने उन्हें भीतर तक हिला दिया। व्यापारी उचित दाम से तीन गुना अधिक दाम लेकर बुनकर को सूत या कपास दिया करते थे। फलतः इस काले-बाजारी और मुनाफाखोरी से त्रस्त होकर हजारों बुनकर-परिवार कुली मजदूरी करने के लिए विवश हो गये थे। ठाकुर साहब ने उन्हें संगठित किया और छत्तीसगढ़ बुनकर-संघ की नींव डाली।"

"जानता हूँ लक्ष्मी नारायण, अच्छी तरह जानता हूँ। छत्तीसगढ़ कन्ज़ूमर्स सोसाइटी, ग्रामीण सहकारी संघ, मध्यप्रदेश पीतल धातु-निर्माता सहकारी संघ और इसी प्रकार की स्थान-स्थान पर अनेक सहकारी संस्थाएँ उनके व्यक्तित्व से जुड़ी हैं। तेलघानी, ढीमर, स्वर्णकार, विश्वकर्मा और न जाने कितने समाजों की सहकारी समितियों के वे जन्मदाता और अध्यक्ष हैं।'

"मैं भी अक्सर सोचता रहता हूँ कि इस आदमी को इन सब संस्थाओं के संचालन का समय कब और कैसे मिलता होगा ? पूँजीवादी शासन व्यवस्था के विरोध में सहकारी आन्दोलनों का इतना बड़ा नेतृत्व करने वाला इस देश में और कोई है, मैं नहीं जानता।" लक्ष्मीनारायण ने कहा।

"इतना सब होते हुए भी रायपुर में उनकी अपनी एक झोपड़ी भी नहीं।" क्या यह काम आश्चर्य का विषय है ? छत्तीसगढ़ का गाँधी, दीनबन्धु, गरीबों का सहारा, त्यागमूर्ति ऐसे ही महापुरुष को कहा गया है। फिर भी ठाकुर साहब के व्यक्तित्व के सामने ये अलंकार भी फीके पड़

है।" कहते हुए शुक्ल जी खिड़की से आसमान की ओर देखते हुए विचारों में खो गये। ऐसा लगा कि जैसे वे उस विराट आसमान से ठाकुर साहब की तुलना के लिए किसी अन्य उपमान की खोज में लीन हो गये हों।

नांवगांव के लोग आकस्मिक ढंग से पर उचित समय पर ठाकुर साहब को अपने बीच पाकर हर्ष से पागल हो उठे। वे उनकी जय जयकार कर रहे थे, पर ठाकुर साहब ने उन्हें रोका और कहा, "अब भारत माता की जय बोलने का शुभ दिन आया है, किसी व्यक्ति की नहीं। सबने मिलकर यह अत्यन्त कठिन यात्रा सम्पन्न की है, किसी एक व्यक्ति ने अकेले नहीं। स्वतंत्रता देश के लाखों-लाखों लोगों के सम्मिलित प्रयत्नों से ही मिल सकी है, यह इस देश का सौभाग्य है कि कल यहाँ शताब्दियों के बाद एक नये स्वतंत्र सूर्य की किरणों का प्रकाश फैलेगा, आओ हम उसका स्वागत करें, उन किरणों से अपने आपको उज्ज्वल बनायें, उनकी गरिमा के अनुकूल अपने को ढालें, एक मानव जीवन की इससे बड़ी और कोई सार्थकता नहीं हो सकती।"

उस रात भर गोल चौक में हजारों लोग इकट्ठे रहे, राष्ट्रीय गीत, भजन और भाषण होते रहे। ठीक बारह बजे दिल्ली में पं० नेहरू ने स्वतंत्रता-प्राप्ति की घोषणा की। आकाशवाणी से यह समाचार सुनकर सारा जन-मानस हर्ष के पारावार में डूब गया। इधर ठाकुर साहब एक सामान्य से कमरे में बैठे हुए ध्यान में लीन थे। वे योग और क्षेम के रक्षक श्रीकृष्ण को धन्यवाद दे रहे थे जिनके नेतृत्व में असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म और अन्धकार पर ज्योति की विजय का सूचक यह महाभारत आज पूरा हो रहा था।

ठाकुर साहब की जब समाधि टूटी तब प्रातः के चार बज चुके थे। नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर वे अपनी दैनिक पूजा-अर्चना में लीन हो गये। उससे मुक्ति पाकर वे अकेले ही हरिजनों के मुहल्ले की ओर चल दिये और वहाँ रास्तों की साफ-सफाई में लग गये। दूसरी ओर

प्रभात फेरियों का उल्लास लाउड स्पीकरों के द्वारा चारों ओर बिखर रहा था, ठाकुर साहब के साथ हरिजन मुहल्ले के कुछ अन्य लोग भी साफ-सफाई के काम करने में लगे थे। ठाकुर साहब उनसे कह रहे थे— "हर्षोल्लास का अपना महत्व है। अपने जीवन का इससे बड़ा और कोई हर्ष उल्लास का दिन हो भी नहीं सकता। अतः उसे प्रगट करना ही चाहिए। प्रसन्नता जीवन की सहज और निश्छल अभिव्यक्ति है, पर इससे अधिक महत्व की बात आज यह है कि हम उन राहों को साफ करें जिन पर नयी पीढ़ी को चलना है।"

दोपहार में रानी साहिबा सूर्यमुखी देवी ने उन्हें स्मरण किया था। ठाकुर साहब उनसे मिलने पुराने किले में पहुँचे थे। रानी साहिबा का स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी वे भेंट कक्ष में बैठकर उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने कहा—"ठाकुर साहब! हमें इस दिन की प्रतीक्षा बहुत समय से थी। हमारा देश स्वतंत्र होकर रहेगा, यह बात मैं बहुत पहले से जानती थी। इस कार्य में आपने जो योगदान दिया है, उससे इस नगर का पूरे देश में सम्मान बढ़ा है। अब शरीर मेरा साथ नहीं देता। लगता है, कुछ ही दिनों की मेहमान हूँ पर मेरी एक अन्तिम इच्छा है, अगर आप पूरा कर सकें तो कहूँ?"

"आज्ञा दीजिये रानी साहिबा।" ठाकुर साहब ने कहा।

"आप जानते हैं, पिछले पचास वर्षों में केवल सात वर्षों तक सर्वेश्वर दास ही यहाँ के राजा के पद पर रह सके हैं, शेष समय यह रियासत कोर्ट आफ वार्ड में रही है। अभी भी है। युवराज दिग्विजय अभी नाबालिग हैं। गद्दी पर बैठने के लिए अभी उन्हें सात वर्षों की देर हैं। तब तक रियासतों का अस्तित्व निश्चित रूप से समाप्त हो जायेगा। यह निश्चित है कि इन सारी देशी रियासतों का संविलियन स्वतंत्र भारत में हो जायेगा, होना ही ही चाहिए।" कहते हुए रानी साहिबा थोड़ी देर के लिए रुकीं। खाँसी के ठसके से भी उनकी विचारधारा में प्रतिरोध उत्पन्न हुआ था।

थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद ठाकुर साहब ने कहा—"रानी साहिबा ! मैं समझा नहीं, आप क्या कहना चाहती हैं। जितनी बात समझ सका हूं वह आपकी महानता के ही अनुकूल है।"

"नहीं ठाकुर साहब ! मैं अभी अपनी बात पूरी कहां कह पाई हूं। ये खांसी अब चैन भी नहीं लेने देती। ये रियासती वातावरण की अंतिम सांसे हैं, जो अब उखड़ती जा रही है ! एक विराट देश के निर्माण के लिए छोटी-छोटी रियासतों का मिटाना बहुत आवश्यक भी है।"

ठाकुर साहब शान्त रहे। थोड़ी देर बाद फिर उन्होंने कहना प्रारंभ किया—"ठाकुर साहब ! मैं आपकी अनेक दिनों से प्रतीक्षा कर रही थी, आप मेरी बातों पर विश्वास कर सकेंगे ? आज ज्यों ही आपके आने का समाचार मिला त्यों ही आपको यहां बुलवाया है और तभी से यहां बैठकर प्रतीक्षा भी कर रही हूं। मैं स्वतंत्रता-संग्राम में तो कोई भाग नही ले सकी पर चाहती हूं कि मेरी यह रियासत विशाल और स्वतंत्र भारत में शामिल होने वाली पहली रियासत का गौरव प्राप्त करे।"

"ऐसा ही होगा रानी साहिबा।" कहकर ठाकुर साहब वापस लौटे थे। थोड़े ही दिनों में छत्तीसगढ़ विलीनीकृत रियासत प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष ठाकुर साहब को मनोनीत किया गया। और जब रियासतों का विलीनीकरण स्वतन्त्र भारत में हुआ तब उस संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने वाली नांदगांव देश की पहली रियासत बनी। रियासत की ओर से हस्ताक्षर स्व० सर्वेश्वरदास की धर्म पत्नी श्रीमती जयति देवी ने किए थे।

□

इक्कीस

□

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के एक प्रान्तीय अधिवेशन में ठाकुर प्यारेलाल ने कांग्रेसियों की खुलकर आलोचना करते हुए कहा कि "मुझे इस बात का संदेह ही नहीं, पूरा विश्वास था कि स्वतन्त्रता के बाद इस देश में अधिकारों तथा सत्ता के दुरुपयोग का एक काला युग प्रारंभ होकर रहेगा। अब कांग्रेसियों की कथनी और करनी में इतना अधिक अन्तर आ गया है कि इन दोनों में समन्वय करके चलना अत्यन्त कठिन हो गया है। सिद्धान्तों की रक्षा करने के स्थान पर अब सर्वत्र स्वार्थ की रक्षा की जा रही है। इन स्थितियों में देश का क्या होगा? कांग्रेस पार्टी द्वारा दिये गये आश्वासनों का क्या होगा? देश की ९८ प्रतिशत जनता के लिए स्वराज्य लाने का जो संकल्प किया गया था, उसका क्या होगा? कांग्रेस के इस गौरव की रक्षा हम ४०-४५ वर्षों से करते चले आ रहे हैं, पर आज इसमें भ्रष्ट तत्वों का बोलबाला होता जा रहा है। मैं यह बात बार-बार कह रहा हूँ कि कांग्रेस मैन अपना आचरण सुधारो···

इस पर सभा के अध्यक्ष ने टिप्पणी की—"कांग्रेस किसी की बपौती नहीं है।"

ठाकुर साहब ने सहज स्वर में कहा—"महंत लक्ष्मी नारायण दास! मैं आज तक कांग्रेस को अपने बाप की समझता था। पर यदि तुम कहते हो कि वह तुम्हारे बाप की है तो लो अपनी कांग्रेस मैं चला।" कहते हुए उन्होंने इस दल की प्राथमिक सदस्यता से भी तत्काल इस्तीफा दे दिया।

इसके बाद वे आचार्य कृपलानी के नेतृत्व में संगठित कृषक मजदूर

प्रजापार्टी के सदस्य बन गये। देश के प्रथम आम चुनाव में वे इसी पार्टी की ओर से रायपुर से चुनाव लड़े और भारी बहुमत से विजयी हुए। इस चुनाव में कांग्रेस का प्रचार करने के लिए पं० नेहरु भी रायपुर आये थे। लोगों के उकसाने पर भी उन्होंने अपने भाषण में ठाकुर साहब के व्यक्तित्व के विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा।

प्रदेश की विधान सभा में ठाकुर प्यारेलाल विरोधी दल के नेता बने, पर तत्कालीन मुख्य मंत्री पं० रविशंकर शुक्ल के वे सदा परम मित्र बने रहे। दोनों में सैद्धान्तिक मतभेद थे किन्तु इस कारण उनके व्यक्तित्व और व्यवहार में किसी के प्रति द्वेष लेशमात्र भी उत्पन्न नहीं हुआ।

थोड़े ही दिनों के बाद कृषक मजदूर प्रजापार्टी तथा समाजवादी दल का परस्पर विलय हो गया, अतः वे इस नये प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य मनोनीत किये गये। इसी के थोड़े दिनों बाद हुआ था—छुई खदान हत्याकाण्ड।

छुई खदान दुर्ग जिले की वैसी ही तहसील थी, जैसी नांदगाँव। पर बिना वहाँ की जनता को विश्वास में लिए मध्यप्रदेश शासन ने एकाएक उस तहसील को तोड़ने का निर्णय ले लिया। इस निर्णय का वहाँ की जनता ने कड़ा विरोध किया, प्रदर्शन किये गये तथा हड़तालें भी हुईं। इस पर दो सौ हथियारबन्द सिपाहियों ने वहाँ अंधाधुंध गोलाबारी की। औरतों के वक्षस्थलों को बूटों से कुचला गया। वीरांगना रमशीला बाई की छाती को एक मदांध इन्सपेक्टर ने तीन गोलियों से छलनी कर दिया। इस गोलीकांड में भूलिन बाई, कनराबाई, पं० बैकुण्ठ प्रसाद तथा पं० द्वारका प्रसाद भी शहीद हो गए। तीन व्यक्ति घायल हुए। इन सबको वहीं उसी हालत में छोड़कर पुलिस-दल जिला मुख्यालय लौट गया।

शान्त सत्याग्रहियों पर स्वतन्त्र भारत में भी इस अमानुषिक बर्बरता के कारण प्यारेलाल का हृदय क्षोभ और आक्रोश से भर गया। उनके

आह्वान पर सम्पूर्ण प्रदेश में "छुई खदान शहीद दिवस" आयोजित किया गया। उन्होंने स्वयं विधान सभा में शुक्ल मंत्रिमण्डल के विरोध में अपना अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा—

"इट इज नाट बिकाज आई लव सीजर लेस, बट बिकाज आई लव रोम मोर" इस अविश्वास प्रस्ताव के मूल में मेरा यही उद्देश्य है। आज हम सबके सामने तीन महत्वपूर्ण बातें हैं। पहली यह कि हमें पंचवर्षीय योजना सफल बनानी है। दूसरी बात है, इसके लिए हमें चुस्त प्रशासन चाहिए और तीसरी बात है जनता का सहयोग। लेकिन क्या ऐसी कार्य-वाही हो रही है जिससे हम कह सकें कि प्रशासन चुस्त है और जनता का सहयोग हमें मिल रहा है ? अगर यह बात नहीं है तो आपकी पंच-वर्षीय योजना का कार्यक्रम असफल रहेगा, ऐसी मेरी धारणा है।

वस्तुतः आज शासकों को शासन के सम्बन्ध में कनफ्यूजन है। उनके कुछ भी निश्चित सिद्धांत नहीं, निश्चित विचारधारा भी नहीं और जब तक निश्चित विचारधारा या सिद्धान्त न हो तब तक चित्त एकाग्र नहीं होता। हम लोगों में यह बड़ी खामी है कि हम समाज-व्यवस्था के निश्चित सिद्धान्त नहीं रखते। हम लोग इज्म के नाम से डरते हैं। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

व्यवसायात्मिका　बुद्धिरेकेह　कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च　बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्॥

अधिकार है, इसलिए हमने ऐसा किया यह हमेशा सत्य नहीं है।

छुई खदान में जो कुछ हुआ, वह प्रशासन की अदूरदर्शिता का परि-णाम है। स्वतन्त्र राष्ट्र में भी वही बर्बरता और आतंक है जो अंग्रेजी शासन में था, तब फिर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए हमारा सारा संघर्ष ही निष्फल हो गया है।

सदन में काफी हो-हल्ला हुआ था और ध्वनि-मत से ठाकुर साहब के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया था।

गंदी राजनीति और इस लघु आदिवासी वाले हत्या काण्ड से क्षुब्ध

बने वे ठाकुर साहब। अतः सक्रिय राजनीति छोड़कर वे भूदान आन्दोलन में कूद पड़े। वे बराबर कहा करते—"समाज के नव-निर्माण के लिए धन और धरती का समान विभाजन परम आवश्यक है। इस विभाजन के दो तरीके हैं—तलवार से और प्रेम से। प्रेम से किये जाने वाले कार्य में स्थायित्व होगा और तलवार का जोर हिंसा और बर्बरता का वातावरण निर्मित करेगा। भूदान आन्दोलन का मूल आधार है—प्रेम, करुणा और शान्ति यह आन्दोलन उन निराश्रित लोगों के लिए है जो इस भूमि पर श्रम तो करते ही हैं किन्तु जिनके पास सोने के लिए भी भूमि नहीं है।

एक दिन एक भूदानी कार्यकर्त्ता उनके पास आया और उनसे निवेदन करने लगा—

"ठाकुर साहब ! आप भी 'जीवनदानी' का आवेदन पत्र भर दें। जयप्रकाश जी ने इस बात पर विशेष जोर दिया है।"

"मैंने तो भूदान के लिए अब जीवन-दान ही कर दिया है, फार्म भर कर क्या होगा ? फार्म वे भरते हैं जिन्हें अपने आप पर विश्वास नहीं होता है, जिनकी चित्तवृत्ति स्थिर नहीं होती। मैं क्षत्रिय हूँ, आगे बढ़कर फिर पीछे नहीं लौटता।"

अब उनकी सारी शक्ति भूदान तथा सर्वोदयी कार्यक्रमों में लग रही थी। वे गाँव-गाँव की यात्रा कर रहे थे और लोगों को समझा-बुझाकर उनसे भूदान में भूमि प्राप्त कर गरीबों तथा भूमिहीन लोगों में वितरित कर रहे थे। वे जहाँ भी गये कभी खाली हाथ नहीं लौटे। उनके मुख मण्डल पर एक अजीब तेज और वाणी में ऐसा सम्मोहन था कि उनकी बातें सुनकर ग्रामीण सचमुच रो उठते और अपनी सारी श्रद्धा उनके चरणों में अर्पित कर देते। कंजूस से कंजूस व्यक्ति भी उनका दास बन जाने में अपना गौरव समझता। अपनी इन यात्राओं के संदर्भ में वे आदिवासी बहुल इलाके में भी गये और अशिक्षा, दरिद्रता तथा शोषण

के पाटों में पिसते हुए आदिवासियों में उन्होंने अपूर्व जागृति का संचार किया ।

उन्होंने अनुभव किया कि आज भी सारा देश गरीबी की ज्वाला में बुरी तरह जल रहा है । इस आग को पहले बुझाना आवश्यक है । इसी उद्देश्य से वे विधान सभा अधिवेशन छोड़कर साढ़े तीन महीनों में २२०० मील की पद यात्रा कर ३०० गाँवों में भूदान तथा नव-जीवन संक्रान्ति का संदेश देने के लिए चल पड़े । उनकी टोली में दादाभाई नाइक, श्रीमती शांता बहन डोंगरे, हरिदास जी मंजुल, शंकर देव मानव, नाना मिसे तथा कुछ अन्य लोग भी थे । बुरहानपुर से यात्रा शुरू हुई और उसी के साथ बरसात भी शुरू हो गई । यह दल उत्तर मध्यप्रदेश की यात्रा करने के लिए चला था । एक दूसरी टोली यहीं से दक्षिण मध्यप्रदेश की यात्रा पर भी रवाना हुई । पन्द्रह दिनों तक लगातार पानी गिरता रहा और यात्री-दल भीगता हुआ आगे बढ़ता रहा । गाँव-गाँव में दल का भव्य स्वागत होता और ठाकुर साहब तथा दादा भाई के भाषण होते । ६४ वर्ष की अवस्था में भी ठाकुर साहब कभी थके नहीं । उनके शान्त, सौम्य, गम्भीर मुख पर शिथिलता के चिह्न प्रकट नहीं हुए । उनका मुख-मण्डल सदा प्रसन्नता से कमल की तरह खिला रहता । किसने खाना खाया, किसने नहीं, कौन पीछे रह गया है, कौन थक गया है, किसका मन उदास है ? वे सबका ध्यान करते हुए आगे बढ़ रहे थे । वे प्रतिदिन बीस मील चलते और विभिन्न स्थानों पर रुककर तीन-चार घंटों तक भाषण देते ।

३९ दिनों में चार सौ मील की पद यात्रा कर उनका दल जबलपुर के निकट करमेता ग्राम पहुँच गया । यहाँ से जबलपुर मात्र तीन मील दूर रह गया था । प्रातःकाल यात्रा प्रारंभ हुई । इस बार वे मुश्किल से आधा मील चल सके और उन्हें घबड़ाहट अनुभव होने लगी । ठंडा पसीना भी आने लगा । थोड़ी देर उन्होंने एक किसान की खाट पर लेटकर विश्राम किया । ज्योंही उन्हें अच्छा लगने लगा तो वे फिर खड़े हो गये और

कहने लगे—"कुछ नहीं, स्नायु दर्द था अब ठीक है।" यात्रा फिर प्रारंभ हुई। पाँच मिनट के बाद ही उन्हें दूसरा दौरा पड़ा और तब उन्हें एक मोटर पर बैठाकर शहर की सीमा तक लाया गया। वहाँ सैकड़ों की संख्या में लोग उनके स्वागत के लिए खड़े हुए थे। उन्हें देखकर ठाकुर साहब मोटर पर बैठे न रह सके और मुस्कराते हुए नीचे उतर आये। इस समय हरिजनों का प्रतिनिधि मण्डल उनसे मिलने आया था। उसने बताया कि जहाँ वे लोग रहते हैं, वह स्थान छोड़ देने के लिए उन्हें जबलपुर नगर निगम का नोटिस मिला है। ठाकुर साहब ने उनकी कठिनाइयाँ ध्यानपूर्वक सुनीं और उनकी मुसीबतें दूर करने का आश्वासन दिया। जनसमूह में अपूर्व उत्साह था। जनता के साथ वे भी लगभग दो घंटों तक शहर में जलूस के साथ पैदल घूमते रहे। जब वे पूरी तरह थक गये तब उन्हें जबरन मोटर पर बैठाकर पड़ाव पर भेजा गया। वहाँ वे कार्य-कर्ताओं से बातचीत करते रहे। भोजन के बाद सेठ गोविन्ददास उनसे मिलने आये। बहुत देर तक उनसे बातचीत होती रही। चर्चा के विषय थे—प्रान्तीय भूदान का संकल्प कैसे पूरा किया जाये? जनता और सरकार इस कार्य में कितनी और कैसे सहायता कर सकती है? कार्यकर्ताओं को कैसे तैयार किया जाय आदि। अपराह्न सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। इसमें ठाकुर साहब ने लगभग डेढ़ घंटे तक मर्मस्पर्शी भाषण दिया।

सम्मेलन की कार्यवाही के थोड़ी देर बाद ही पवनार से दादा धर्माधिकारी भी पहुँच गये। फिर इन दोनों में आगामी कार्यक्रम पर विचार विमर्श होने लगा। इसके बाद वे प्रार्थना में सम्मिलित हुए। रात्रि के नौ बजे तक पुनः कार्यकर्ताओं के बीच उनकी समस्याओं का समाधान करते रहे। रात्रि में सोने से पूर्व उन्होंने दादा भाई को कुछ महत्वपूर्ण नोट्स भी लिखाये और तब बिस्तर पर लेटे। अचानक उनकी छाती में दर्द बढ़ गया, बढ़ता गया। तत्काल डाक्टर को बुलाया गया पर ठाकुर साहब समझ गये थे कि अब उनका शरीर आत्मा का साथ देने में असमर्थ होता जा रहा है। वे मन को एकाग्र कर राम-राम जपने लगे। फिर

मूर्छित हो गये । लगभग दस मिनट मृत्यु से संघर्ष करने के बाद उनके मुख से अन्तिम बार राम का उच्चारण सुनाई दिया और इस तरह वे (२०-१०-५४) भूदान आन्दोलन के प्रथम शहीद बन गये ।

उनके निधन समाचार से सारा देश शोक में डूब गया । उनका शव बर्फ में ढककर एक विशेष मोटर द्वारा जबलपुर से सिवनी, बालाघाट, गोंदिया, राजनांदगांव, दुर्ग होते हुए रायपुर ले आया गया । जहां-जहां से उनका शव गुजरा, हजारों की संख्या में एकत्र होकर जनता ने उनके प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित की । रायपुर में शोक का समुद्र उमड़ पड़ा । पचास हजार से अधिक जनता उनके अन्तिम दर्शन की प्रतिक्षा में रात भर आंसू बहाती रही ।

अर्द्धरात्रि के लगभग उनका शव राजनांदगांव पहुंचा । हजारों-हजार मजदूर और ठाकुर साहब के साथी-संगी, शिष्य और सगे-संबंधी उनके अंतिम दर्शन के लिए रास्ते में खड़े हुए थे । शव के पहुंचते ही महिलाएँ फूट-फूटकर रो पड़ीं । सुमित्रा ने अपना सिर ठाकुर साहब के चरणों में रखकर कहा—"मेरे वकील ! तूने इहलोक और परलोक दोनों ही साध लिया । स्वयं बैकुण्ठ चले गये, लेकिन हमें क्यों अनाथ छोड़ गये ।"

हिन्दी विभाग,
[illegible], कलकत्ता।